CBT QUESTION PAPER CLASS 9

पद्य भाग

कबीर – सखियाँ और सबद

प्रश्न 1.मानसरोवर सुभग जल हंसा केलि कराहि
मुकताफल मुकता चुगै अब उड़ी अनत न जाही।
मानसरोवर में कौन विहार कर रहा है?

(क) हंस

(ख) लेखक

(ग) बगुला

(घ) मुकता

उत्तर (क) हंस

प्रश्न 2. प्रेमी ढूँढत मैं फिरौ प्रेमी मिले न कोई
प्रेमी कौं प्रेमी मिले सब विष अमृत होई।
ढूँढत शब्द का अर्थ हैं?

(क) बिसरना

(ख) खो जाना

(ग) याद करना

(घ) खोजना

उत्तर (घ) खोजना

प्रश्न 3.सोई संत सुजान में 'सुजान ' का शाब्दिक अर्थ क्या है?

(क) मतलबी

(ख) बुद्धिहीन

(ग) चतुर

(घ) स्वार्थी

उत्तर (ग) चतुर

प्रश्न 4. उदित भया तम खीनाँ। पंक्ति में खीनाँ शब्द का अर्थ है?

(क) जीवित

(ख) मरना

(ग) क्षीण हुआ

(घ) अधमरा

उत्तर (ग) क्षीण हुआ

प्रश्न 5. हस्ती चढ़िये ज्ञान कौं सहज दुलीचा डारी । पंक्ति में दुलीचा शब्द का अर्थ है?

(क) सालिन

(ख) कालीन

(ग) मलिन

(घ) शराब

उत्तर (ख) कालीन

प्रश्न 6.मोकों कहाँ ढूँढ़े बंदे, मैं तो तेरे पास में।

उपर्युक्त पंक्ति में मैं शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ है?

(क) अहंकार के लिए

(ख) कबीर दास जी के लिए

(ग) भगवान के लिए

(घ) मनुष्य के लिए

उत्तर (ग) भगवान के लिए

प्रश्न 7.मोकों कहाँ ढूँढ़े बंदे, मैं तो तेरे पास में।

ना मैं देवल ना मैं मस्जिद, ना काबे कैलास में।

ना तो कौने क्रिया कर्म में, नहीं योग बैराग में।

खोजी होय तो तुरतहि मिलियो, पल भर की तालास में।

कहे कबीर सुनो भाई साधो, सब स्वांसो की स्वांस में।

पद्यांश के अनुसार कबीर दास जी के अनुसार ईश्वर का वास कहां है?

(क) मंदिर में

(ख) मस्जिद में

(ग) काबा में

(घ) प्रत्येक जीव की सांस में

उत्तर (घ) प्रत्येक जीव की सांस में

प्रश्न 8. पखापखी के कारने सब जग रहा भुलान

निरपख होई के हरी भजै, सोई संत सुजान।

पंक्ति के अनुसार कबीर ने सच्चे संत की क्या विशेषता बताई है?

(क) वह किसी एक मत को मानने वाला हो।

(ख) वह अपने पक्ष का समर्थन करने वाला हो।

(ग) वह निष्पक्ष होकर ईश्वर का भजन करता हो।

(घ) सभी मतों को मानता हो।

उत्तर (ग) वह निष्पक्ष होकर ईश्वर का भजन करता हो।

प्रश्न 9.संतौं भाई आई ग्याँन की आँधी रे।

भ्रम की टाटी सबै उड़ाँनी, माया रहै न बाँधी॥

हिति चित्त की द्वै थूँनी गिराँनी, मोह बलिंडा तूटा।

त्रिस्नाँ छाँनि परि घर ऊपरि, कुबधि का भाँडाँ फूटा।

जोग जुगति काया का निकस्या, हरि की गति जब जाँणी॥

आँधी पीछै जो जल बूठा, प्रेम हरि जन भींनाँ।

कहै कबीर भाँन के प्रगटे उदित भया तम खीनाँ॥

उपयुक्त पद्यांश के आधार पर ज्ञान की आंधी आने से क्या तात्पर्य है?

(क) मनुष्य का भ्रम टूट जाता है।

(ख) माया मोह से छुटकारा मिल जाता है।

(ग) क और ख दोनों।

(घ) मनुष्य का ज्ञान समाप्त हो जाता है।

उत्तर (ग) क और ख दोनों।

प्रश्न 10.मानसरोवर सुभग जल हंसा केलि कराहि

मुकताफल मुकता चुगै अब उड़ी अनत न जाही।

पंक्ति में कौन सा अलंकार है?

(क) अन्योक्ति

(ख) श्लेष

(ग) रूपक

(घ) उपमा

उत्तर (क) अन्योक्ति

ललद्यद – वाख

प्रश्न 1.खा खाकर कुछ पाएगा नहीं,

न खाकर बनेगा अहंकारी।

सम खा तभी होगा समभावी,

खुलेगी साँकल बंद द्वार की।

उपयुक्त पंक्तियों में बंद द्वार की साँकल खुलने से क्या तात्पर्य है?

(क) प्रज्ञा चक्षुओं का खुलना।

(ख) दरवाजा खुल जाना

(ग)परमात्मा के पास जाने का रास्ता खुल जाना।

(घ) संसार से विदा होना ।

उत्तर (क) प्रज्ञा चक्षुओं का खुलना।

प्रश्न 2.आई सीधी राह से, गई न सीधी राह।

सुषुम सेतु पर खड़ी थी, बीत गया दिन आह।

जेब टटोली, कौड़ी न पाई।

माझी को दूँ, क्या उतराई।

पंक्तियों में जेब टटोली से क्या तात्पर्य है?

(क) खर्च का हिसाब लगाना।

(ख) आत्मावलोकन करना ।

(ग) मांझी को उसका किराया देना।

(घ) किसी का ऋणी न रहना।

उत्तर (ख) आत्मावलोकन करना ।

प्रश्न 3.सम खा तभी होगा समभावी।

पंक्ति में कौन सा अलंकार है।

(क) यमक

(ख) रूपक

(ग) श्लेष

(घ) उपमा

उत्तर (क) यमक

प्रश्न 4.सुषुम सेतु पर खड़ी थी।

पंक्ति में कौन सा अलंकार है?

(क) यमक

(ख) रूपक

(ग) श्लेष

(घ) उपमा

उत्तर (ख) रूपक

प्रश्न 5.रस्सी कच्चे धागे की, खींच रही मैं नाव।

जाने कब सुन मेरी पुकार, करें देव भवसागर पार्।

पानी टपके कच्चे सकोरे, व्यर्थ प्रयास हो रहे मेरे।

जी में उठती रह रह हूक, घर जाने की चाह है घेरे॥

कच्चा धागा किसका प्रतीक है?

(क) कच्चे प्रेम का

(ख) सच्चे प्रेम का

(ग) कमजोर और नाशवान सहारे का।

(घ) कच्ची पुकार का

उत्तर (ग) कमजोर और नाशवान सहारे का।

प्रश्न 6.रस्सी कच्चे धागे की, खींच रही मैं नाव।

जाने कब सुन मेरी पुकार, करें देव भवसागर पार्।

पानी टपके कच्चे सकोरे, व्यर्थ प्रयास हो रहे मेरे।

जी में उठती रह रह हूक, घर जाने की चाह है घेरे

कवियत्री के मोक्ष प्राप्ति के रास्ते बंद क्यों हैं?

(क) उनके प्रयास कमज़ोर है।

(ख) उन्होंने नाशवान चीजों का सहारा लिया है।

(ग) वह मोह से ग्रस्त है।

(घ) वह ईश्वर में विश्वास नहीं रखती।

उत्तर (ख) उन्होंने नाशवान चीजों का सहारा लिया है।

प्रश्न 7.माझी को दूँ, क्या उतराई। पंक्ति में माझी कौन है ?

(क) मल्लाह

(ख) साथी

(ग) पति

(घ) परमात्मा

उत्तर (घ) परमात्मा

प्रश्न 8. माझी को दूँ, क्या उतराई। पंक्ति में उतराई किसे माना है?

(क) चंचलता को

(ख) सद्कर्मों को

(ग) क्रोध और मोह को

(घ) ईर्ष्या और द्वेष को

उत्तर (ख) सद्कर्मों को

प्रश्न 9.रस्सी कच्चे धागे की, खींच रही मैं नाव।

पंक्ति में कौन सा अलंकार है?

(क) उपमा

(ख) रूपक

(ग) श्लेश

(घ) अनुप्रास

उत्तर (ख) रूपक

प्रश्न 10.सम खा तभी होगा समभावी।

पंक्ति में सम खा से क्या तात्पर्य है

(क) मन को वश में करना।

(ख) अहंकार करना।

(ग) मन के अनुसार चलना।

(घ) सबको समान समझना।

उत्तर (क) मन को वश में करना।

रसखान – सवैये

प्रश्न 1. या मुरली मुरलीधर की अधरान धरी अधरा न धरौंगी । पंक्ति में गोपी के किस मनोभाव का पता चलता है?

(क) मुरली के प्रति ईर्ष्या का भाव।

(ख) मुरली के प्रति मित्रता का भाव।

(ग) मुरली की प्रति प्रेम का भाव।

(घ) मुरली के प्रति लगाव का भाव।

उत्तर (क) मुरली के प्रति ईर्ष्या का भाव।

प्रश्न 2. मानुष हौं तो वही रसखानि बसौं ब्रज गोकुल गाँव के ग्वारन।

जौ पसु हौं तो कहा बस मेरो चरौं नित नंद की धेनु मँझारन॥

पाहन हौं तो वही गिरि को जो कियो हरिछत्र पुरंदर धारन।

जौ खग हौं तो बसेरो करौं मिलि कालिंदी कूल कदंब की डारन।

उपयुक्त पंक्ति के आधार पर पक्षीबनने पर कवि कहां पर अपना बसेरा बनाना चाहते हैं।

(क) पेड़ पर

(ख) नदी के किनारे

(ग) यमुना के किनारे कदंब के पेड़ पर।

(घ) गोवर्धन पर्वत पर।

उत्तर (ग) यमुना के किनारे कदंब के पेड़ पर।

प्रश्न 3.या लकुटी अरु कामरिया पर राज तिहूँ पुर को तजि डारौं।

आठहुँ सिद्धि नवौ निधि के सुख नंद की गाइ चराइ बिसारौं॥

रसखान कबौं इन आँखिन सौं, ब्रज के बन बाग तड़ाग निहारौं।

कोटिक ए कलधौत के धाम करील के कुंजन ऊपर वारौं॥

उपयुक्त पंक्तियों में कभी कितनी सिद्धि और निधि न्योछावर करने की बात कर रहा है

(क) नौ सिद्धि और आठ निधि

(ख) आठ सिद्धि और नौ निधि

(ग) आठ सिद्धि और आठ निधि

(घ) नौ सिद्धि और नौ निधि

उत्तर (ख) आठ सिद्धि और नौ निधि

प्रश्न 4.काल्हि कोऊ कितनो समुझैहै।

पंक्ति में निहित अलंकार है?

(क) यमक

(ख) अनुप्रास

(ग) रूपक

(घ) श्लेष

उत्तर (ख) अनुप्रास

प्रश्न 5. .या लकुटी अरु कामरिया पर राज तिहूँ पुर को तजि डारौं।

आठहुँ सिद्धि नवौ निधि के सुख नंद की गाइ चराइ बिसारौं॥

रसखान कबौं इन आँखिन सौं, ब्रज के बन बाग तड़ाग निहारौं।

कोटिक ए कलधौत के धाम करील के कुंजन ऊपर वारौं॥

रसखान अपनी इन आंखों से क्या देखना चाहते है?

(क) अपनी प्रियतमा को।

(ख) ब्रज के वन ,बाग और तड़ागो को।

(ग) राजा को

(घ) लकुटी को

उत्तर (ख) ब्रज के वन ,बाग और तड़ागो को।

प्रश्न 6..या लकुटी अरु कामरिया पर राज तिहूँ पुर को तजि डारौं।

आठहुँ सिद्धि नवौ निधि के सुख नंद की गाइ चराइ बिसारौं॥

रसखान कबौं इन आँखिन सौं, ब्रज के बन बाग तड़ाग निहारौं।

कोटिक ए कलधौत के धाम करील के कुंजन ऊपर वारौं॥

उपयुक्त पंक्तियों के आधार पर लखुटी और कमरिया पर क्या न्यौछावर किया जा सकता है?

(क) अपना तन मन ।

(ख) तीनों लोको का राज।

(ग) अपना गांव

(घ) अपनी संपूर्ण पूंजी।

उत्तर (ख) तीनों लोको का राज।

प्रश्न 7. मोरपखा सिर ऊपर राखिहौं, गुंज की माल गरें पहिरौंगी।

ओढ़ि पितंबर लै लकुटी बन गोधन ग्वारनि संग फिरौंगी॥

भावतो वोहि मेरो रसखानि सों तेरे कहे सब स्वांग करौंगी।

या मुरली मुरलीधर की अधरान धरी अधरा न धरौंगी॥ पंक्ति के आधार पर बताइए कि गोपियों की क्या कामना है

(क) ईश्वर को प्राप्त करना।

(ख) श्रीकृष्ण से मिलना।

(ग) श्रीकृष्ण का स्वांग करना

(घ) गाय चराना।

उत्तर (ग) श्रीकृष्ण का स्वांग करना

प्रश्न 8.मोरपखा सिर ऊपर राखिहौं, गुंज की माल गरें पहिरौंगी।

ओढ़ि पितंबर लै लकुटी बन गोधन ग्वारनि संग फिरौंगी॥

भावतो वोहि मेरो रसखानि सों तेरे कहे सब स्वांग करौंगी।

या मुरली मुरलीधर की अधरान धरी अधरा न धरौंगी॥

गोपिया कृष्ण की मुरली को अपने होठों से क्यों नहीं लगाना चाहती?

(क) वह मुरली को अपनी सौत समझती है।

(ख) वह मुरली कृष्ण के होठों पर लगी हुई है।

(ग) उन्हीं मुरली बजाना नहीं आता।

(घ) उन्हें मुरली अच्छी नहीं लगती।

उत्तर (क) वह मुरली को अपनी सौत समझती है।

प्रश्न 9.या मुरली मुरलीधर की अधरान धरी अधरा न धरौंगी॥

पंक्ति में निहित अलंकार है

(क) रूपक

(ख) श्लेष

(ग) उत्पेक्षा

(घ) यमक

उत्तर (घ) यमक

प्रश्न 10. मुरलीधर में कौनसा समास है?

(क) तत्पुरुष समास

(ख) अव्ययीभाव समास

(ग) बहुव्रीहि समास

(घ) द्वंद्व समास

उत्तर (ग) बहुव्रीहि समास

माखनलाल चतुर्वेदी – कैदी और कोकिला

प्रश्न 1.क्यों हूक पड़ी?

वेदना बोझ वाली सी

कोकिल बोलो तो

क्या लुटा?

मृदुल वैभव की रखवाली सी

कोकिल बोलो तो!

पंक्ति में कवि ने कोयल के लिए किस विशेषण का प्रयोग किया है ?

(क) दावानल सी

(ख) वेदना सी

(ग) मृदुल वैभव की रखवाली सी

(घ) ज्वालाओं सी

उत्तर (ग) मृदुल वैभव की रखवाली सी

प्रश्न 2.क्या हुई बावली?

अर्ध रात्रि को चीखी कोकिल बोलो तो!

किस दावानल की ज्वालायें हैं दीखी?

कोकिल बोलो तो!

दावानल कौनसी आग होती हैं?

(क) समूद्र की

(ख) जंगल की

(ग) पेट की

(घ) ईर्ष्या की

उत्तर (ख) जंगल की

प्रश्न 3.क्या हुई बावली?

अर्ध रात्रि को चीखी कोकिल बोलो तो!

आधी रात को किसकी चीख कभी को विचलित कर देती है?

(क) कैदी की

(ख) सैनिक की

(ग) अंग्रेज अधिकारी की

(घ) कोयल की

उत्तर (घ) कोयल की

प्रश्न 4.काली तू रजनी भी काली,

शासन की करनी भी काली,

काली लहर कल्पना काली,

मेरी काल कोठरी काली,

टोपी काली, कमली काली,

मेरी लौह श्रृंखला खाली,

पहरे की हुंकृति की व्याली,

तिस पर है गाली ए आली!

कवि ने अंग्रेजी शासन की तुलना किस रंग से की है?

(क) काला

(ख) लाल

(ग) हरा

(घ) नीला

उत्तर (क) काला

प्रश्न 5.मृदुल वैभव की रखवाली सी

कोकिल बोलो तो!

पंक्ति में निहित अलंकार है?

(क) यमक

(ख) श्लेष

(ग) रूपक

(घ) उपमा

उत्तर (घ) उपमा

प्रश्न 6.इस काले संकट सागर पर। इस पंक्ति में निहित अलंकार है

(क) यमक

(ख) श्लेष

(ग) रूपक

(घ) उपमा

उत्तर (ग) रूपक

प्रश्न 7.तुझे मिली हरियाली डाली

मुझे मिली कोठरी काली!

तेरा नभ भर में संचार

मेरा दस फुट का संसार!

तेरे गीत कहावें वाह

रोना भी है मुझे गुनाह!

देख विषमता तेरी मेरी

बजा रही तिस पर रणभेरी!

कवि को कोयल से ईर्ष्या क्यों है?

(क) कोयल की आवाज सुंदर है।

(ख) कोयल दिखने में सुंदर है।

(ग) कोयल स्वतंत्र है।

(घ) कोयल रात में चिल्ला रही है।

उत्तर (ग) कोयल स्वतंत्र है।

प्रश्न 8.तुझे मिली हरियाली डाली

मुझे मिली कोठरी काली!

तेरा नभ भर में संचार

मेरा दस फुट का संसार!

तेरे गीत कहावें वाह

रोना भी है मुझे गुनाह!

देख विषमता तेरी मेरी

बजा रही तिस पर रणभेरी!

पंक्ति के अनुसार कवि की काल कोठरी कितने फुट लंबी है।

(क) पांच

(ख) सात

(ग) आठ

(घ) दस

उत्तर (घ) दस

प्रश्न 9.क्या? देख न सकती जंजीरों का गहना?

हथकड़ियाँ क्यों? ये ब्रिटिश राज का गहना।

कोल्हू का चर्रक चूं जीवन की तान।

गिट्टी पर अंगुलियों ने लिखे गान!

हूँ मोट खींचता लगा पेट पर जूआ

खाली करता हूँ ब्रिटिश अकड़ का कूआ

दिन में करुणा क्यों जगे, रुलानेवाली

इसलिए रात में गजब ढ़ा रही आली?

कोल्हू का चर्रक चूं की आवाज़ कवि के लिए क्या हैं?

(क) रुलानेवाली

(ख) करुणा वाली

(ग) जीवन की तान।

(घ) गजब ढ़ाने वाली

उत्तर (ग) जीवन की तान

प्रश्न 10.क्या? देख न सकती जंजीरों का गहना?

हथकड़ियाँ क्यों? ये ब्रिटिश राज का गहना।

कोल्हू का चर्रक चूं जीवन की तान।

गिट्टी पर अंगुलियों ने लिखे गान!

हूँ मोट खींचता लगा पेट पर जूआ

खाली करता हूँ ब्रिटिश अकड़ का कूआ

दिन में करुणा क्यों जगे, रुलानेवाली

इसलिए रात में गजब ढ़ा रही आली?

उपयुक्त पंक्तियों के अनुसार कई पर रात में कौन गजब ढा रहा है?

(क) सैनिक

(ख) चोर

(ग) अंग्रेज अधिकारी

(घ) कोयल

उत्तर (घ) कोयल

सुमित्रानंदन पंत -ग्राम श्री

प्रश्न 1.फैली खेतों में दूर तलक,

मखमल की कोमल हरियाली,

लिपटी जिससे रवि की किरणें

चांदी की सी उजली जाली।

तिनके के हरे हरे तन पर

हिल हरित रुधिर है रहा झलक,

श्यामल भूतल पर झुका हुआ

नभ का चिर निर्मल नील फलक।

ऊपर पंक्ति के अनुसार हरी भरी फसलों की शोभा कैसी है?

(क) नीली

(ख) मखमली

(ग) हरित

(घ) उजली

उत्तर (ख) मखमली

प्रश्न 2.फैली खेतों में दूर तलक,

मखमल की कोमल हरियाली,

लिपटी जिससे रवि की किरणें

चांदी की सी उजली जाली।

तिनके के हरे हरे तन पर

हिल हरित रुधिर है रहा झलक,

श्यामल भूतल पर झुका हुआ

नभ का चिर निर्मल नील फलक।

ऊपर पंक्ति के अनुसार सुबह सूरज की किरने किसके समान लगती है

(क) चांदी की जाली के समान।

(ख) नीले फलक के समान।

(ग) श्यामल भूतल के समान।

(घ) कोमल हरियाली के समान।

उत्तर (क) चांदी की जाली के समान।

प्रश्न 3.रोमांचित सी लगती वसुधा

आई जौ गेहूं में बाली,

अरहर सनई की सोने की

किंकिनियाँ हैं शोभाशाली।

उड़ती भीनी तैलाक्त गंध

फूली सरसों पीली पीली,

लो, हरित धरा से झाँक रही

नीलम की कली, तीसी नीली।

अरहर और सनी की बालियां किस रंग की है ?

(क) नीली

(ख) पीली

(ग) सुनहरी

(घ) हरी

उत्तर (ग) सुनहरी

प्रश्न 4.रोमांचित सी लगती वसुधा

आई जौ गेहूं में बाली,

अरहर सनई की सोने की

किंकिनियाँ हैं शोभाशाली।

उड़ती भीनी तैलाक्त गंध

फूली सरसों पीली पीली,

लो, हरित धरा से झाँक रही

नीलम की कली, तीसी नीली।

अरहर और सनी की बालियां किस रंग की है ?

उपयुक्त पंक्तियों में कवि ने किस ऋतु के आगमन का वर्णन किया है

(क) वसंत

(ख) सर्दी

(ग) गर्मी

(घ) वर्षा

उत्तर (क) वसंत

प्रश्न 5.अब रजत स्वर्ण मंजरियों से

लद गई आम्र तरु की डाली

झर रहे ढ़ाक, पीपल के दल

हो उठी कोकिला मतवाली।

महके कटहल, मुकुलित जामुन

जंगल में झरबेरी झूली,

फूले आड़ू, नीम्बू, दारिम

आलू, गोभी, बैगन, मूली।

आम के पेड़ों की शाखओ का बोर किस रंग का है?

(क) लाल पीला

(ख) पीला सफेद

(ग) सोना चांदी

(घ) लाल सफेद

उत्तर (ग) सोना चांदी

प्रश्न 6.बालू के सांपों से अंकित

गंगा की सतरंगी रेती

सुंदर लगती सरपट छाई

तट पर तरबूजों की खेती

अंगुली की कंघी से बगुले

कलगी संवारते हैं कोई

तिरते जल में सुरखाब, पुलिन पर

मगरौठी रहती है सोई।

कवि ने किस नदी के किनारे की बात की है?

(क) गंगा

(ख) यमुना

(ग) सरस्वती

(घ) सतलुज

उत्तर (क) गंगा

प्रश्न 7.बालू के सांपों से अंकित

गंगा की सतरंगी रेती

सुंदर लगती सरपट छाई

तट पर तरबूजों की खेती

अंगुली की कंघी से बगुले

कलगी संवारते हैं कोई

तिरते जल में सुरखाब, पुलिन पर

मगरौठी रहती है सोई।

उपरोक्त पंक्तियों के अनुसार नदी के तट पर किसकी खेती होती है?

(क) खरबूजे की

(ख) तरबूजों की

(ग) नारियल की

(घ) अमरूद की

उत्तर (ख) तरबूजों की

प्रश्न 8.हंसमुख हरियाली हिम आतप

सुख से अलसाए से सोये,

भीगी अंधियाली में निशि की

तारक स्वप्नों में से खोये।

मरकत डिब्बे सा खुला ग्राम

जिस पर नीलम नभ आच्छादन

निरुपम हिमांत में स्निग्ध शांत

निज शोभा से हरता जन मन।

गांव पर आकाश किसके सम्मान आच्छादित है?

(क) नीलम

(ख) पुखराज

(ग) मरकत

(घ) पन्ना

उत्तर (क) नीलम

प्रश्न 9पीले मीठे अमरूदों में

अब लाल लाल चित्तियाँ पड़ीं

पक गये सुनहरे मधुर बेर

अंवली से तरु की डाल जड़ी

लहलह पालक, महमह धनिया

लौकी औ सेम फलीं फैलीं।

मखमली टमाटर हुए लाल

मिरचों की बड़ी हरी थैली।

पीली अमरूदों में क्या पड़ गए हैं?

(क) रस

(ख) छेद

(ग) लाल काले धब्बे

(घ) पक गए

उत्तर (ग) लाल काले धब्बे

प्रश्न 10रोमांचित सी लगती वसुधा

आई जौ गेहूं में बाली,

अरहर सनई की सोने की

किंकिनियाँ हैं शोभाशाली।

उड़ती भीनी तैलाक्त गंध

फूली सरसों पीली पीली,

लो, हरित धरा से झाँक रही

नीलम की कली, तीसी नीली।

उपयुक्त पद्यांश के अनुसार वातावरण में तैलाक्त गंध क्यों है?

(क) आसपास सरसों के बीजों से तेल निकल जाने के कारण ।

(ख) तेल का बर्तन गिर जाने के कारण ।

(ग) पीली सरसों के फूलों के कारण।

(घ) तेल में भोजन बनाए जाने के कारण।

उत्तर (ग) पीली सरसों के फूलों के कारण।

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना - मेघ आये

प्रश्न 1.मेघ आये बड़े बन ठन के संवर के

आगे-आगे नाचती गाती बयार चली

दरवाजे खिड़कियाँ खुलने लगीं गली गली

पाहुन ज्यो आये हों गाँव में शहर के

मेघ आये बड़े बन ठन के संवर के

उपर्युक्त पद्यांश के अनुसार हवा कैसे चलती है?

(क) रोती हुई।

(ख) हंसती गाती।

(ग) नाचती गाती

(घ) धूल उडाती हुई ।

उत्तर (ग) नाचती गाती

प्रश्न 2.मेघ आये बड़े बन ठन के संवर के

आगे-आगे नाचती गाती बयार चली

दरवाजे खिड़कियाँ खुलने लगीं गली गली

पाहुन ज्यो आये हों गाँव में शहर के

मेघ आये बड़े बन ठन के संवर के

उपर्युक्त पद्यांश के अनुसार गांव में पाहुन कहां से आए?

(क) विदेश से

(ख) गांव से

(ग) नगर से

(घ) कस्बे से

उत्तर (ग) नगर से

प्रश्न 3.बूढ़े पीपल ने बढ़कर आगे जुहार की

बरस बाद सुधि लीन्ही' –

बोली अकुलाई लता ओट हो किवाड़ की

हरसाया ताल लाये पानी परात भर के

मेघ आये बड़े बन–ठन के संवर के।

किसकी ओट से लता अकुलाई थीं?

(क) दीवार के

(ख) किवाड़ के

(ग) खिड़की

(घ) पेड़

उत्तर (ख) किवाड़ के

प्रश्न 4.बूढ़े पीपल ने बढ़कर आगे जुहार की

बरस बाद सुधि लीन्ही' –

बोली अकुलाई लता ओट हो किवाड़ की

हरसाया ताल लाये पानी परात भर के

मेघ आये बड़े बन–ठन के संवर के।

बरस बाद सुधि लीन्ही' – किसने कहा था ?

(क) लता ने ।

(ख) बूढ़े पीपल ने ।

(ग) ताल ने ।

(घ) मेघ ने ।

उत्तर (ख) बूढ़े पीपल ने ।

प्रश्न 5.बूढ़े पीपल ने बढ़कर आगे जुहार की

बरस बाद सुधि लीन्ही' –

बोली अकुलाई लता ओट हो किवाड़ की

हरसाया ताल लाये पानी परात भर के

मेघ आये बड़े बन–ठन के संवर के।

परात भरकर पानी कौन लाता है?

(क) बूढ़ा पीपल

(ख) मेघ

(ग) लता

(घ) ताल

उत्तर (घ) ताल

प्रश्न 6.क्षितिज अटारी गहराई दामिनी दमकी

क्षमा करो गांठ खुल गई अब भरम की

बाँध टूटा झर-झर मिलन के अश्रु ढ़रके

मेघ आये बड़े बन-ठन के संवर के।

मिलन के अवसर पर क्या छलके हैं?

(क) आंसू।

(ख) हृदय के दुःख।

(ग) मन के पीड़ा भाव।

(घ) पसीने के कण ।

उत्तर (क) आंसू।

प्रश्न 7. पेड़ झुक झाँकने लगे गरदन उचकाये

आंधी चली, धूल भागी घाघरा उठाये

बांकी चितवन उठा, नदी ठिठकी घूंघट सरके

मेघ आये बड़े बन-ठन के संवर के।

नदी ने अपने मुख पर मुख क्या सरका लिया?

(क) घूंघट

(ख) परदा

(ग) घास

(घ) पत्ते

उत्तर (क) घूंघट

प्रश्न 8.बूढ़े पीपल ने बढ़कर आगे जुहार की

बरस बाद सुधि लीन्ही' –

बोली अकुलाई लता ओट हो किवाड़ की

हरसाया ताल लाये पानी परात भर के

मेघ आये बड़े बन–ठन के संवर के।

परात भरकर पानी कौन लाता है?

परिवार का सदस्य परात भरकर पानी क्यों लाता है?

(क) हाथ धोने के लिए।

(ख) मुंह धोने के लिए ।

(ग) चरण धोने के लिए ।

(घ) कपड़े धोने के लिए ।

उत्तर (ग) चरण धोने के लिए ।

प्रश्न 9.बाँध टूटा झर–झर मिलन के अश्रु ढ़रके।

इस पंक्ति में बांध टूटना किस बात को दर्शाता है?

(क) नाराजगी के भाव को।

(ख) कलह समाप्त होने के भाव को।

(ग) वर्षा के होने को।

(घ) प्रेम के मधुर पल का।

उत्तर (ग) वर्षा के होने को।

प्रश्न 10.बांकी चितवन उठा, नदी ठिठकी घूंघट सरके। पंक्ति का अर्थ बताओ?

(क) नदी ने अपना घूंघट नहीं हटाया।

(ख) नदी ठिठकी नहीं है।

(ग) नदी सीधे मेहमान को देख रही है।

(घ) नदी रूपी स्त्री रुक कर अपने घूंघट को हटाकर तिरछी नजरों से मेहमान को देख रही है।

उत्तर (घ) नदी रूपी स्त्री रुक कर अपने घूंघट को हटाकर तिरछी नजरों से मेहमान को देख रही है।

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना – मेघ आये

प्रश्न 1.मेघ आये बड़े बन ठन के संवर के

आगे–आगे नाचती गाती बयार चली

दरवाजे खिड़कियाँ खुलने लगीं गली गली

पाहुन ज्यो आये हों गाँव में शहर के

मेघ आये बड़े बन ठन के संवर के

उपर्युक्त पद्यांश के अनुसार हवा कैसे चलती है?

(क) रोती हुई।

(ख) हंसती गाती।

(ग) नाचती गाती

(घ) धूल उडाती हुई ।

उत्तर (ग) नाचती गाती

प्रश्न 2.मेघ आये बड़े बन ठन के संवर के

आगे–आगे नाचती गाती बयार चली

दरवाजे खिड़कियाँ खुलने लगीं गली गली

पाहुन ज्यो आये हों गाँव में शहर के

मेघ आये बड़े बन ठन के संवर के

उपर्युक्त पद्यांश के अनुसार गांव में पाहुन कहां से आए?

(क) विदेश से

(ख) गांव से

(ग) नगर से

(घ) कस्बे से

उत्तर (ग) नगर से

प्रश्न 3.बूढ़े पीपल ने बढ़कर आगे जुहार की

बरस बाद सुधि लीन्ही' –

बोली अकुलाई लता ओट हो किवाड़ की

हरसाया ताल लाये पानी परात भर के

मेघ आये बड़े बन–ठन के संवर के।

किसकी ओट से लता अकुलाई थीं?

(क) दीवार के

(ख) किवाड़ के

(ग) खिड़की

(घ) पेड़

उत्तर (ख) किवाड़ के

प्रश्न 4.बूढ़े पीपल ने बढ़कर आगे जुहार की

बरस बाद सुधि लीन्ही' –

बोली अकुलाई लता ओट हो किवाड़ की

हरसाया ताल लाये पानी परात भर के

मेघ आये बड़े बन–ठन के संवर के।

बरस बाद सुधि लीन्ही' – किसने कहा था ?

(क) लता ने ।

(ख) बूढ़े पीपल ने ।

(ग) ताल ने ।

(घ) मेघ ने ।

उत्तर (ख) बूढ़े पीपल ने ।

प्रश्न 5.बूढ़े पीपल ने बढ़कर आगे जुहार की

बरस बाद सुधि लीन्ही' –

बोली अकुलाई लता ओट हो किवाड़ की

हरसाया ताल लाये पानी परात भर के

मेघ आये बड़े बन–ठन के संवर के।

परात भरकर पानी कौन लाता है?

(क) बूढ़ा पीपल

(ख) मेघ

(ग) लता

(घ) ताल

उत्तर (घ) ताल

प्रश्न 6.क्षितिज अटारी गहराई दामिनी दमकी

क्षमा करो गांठ खुल गई अब भरम की

बाँध टूटा झर-झर मिलन के अश्रु ढ़रके

मेघ आये बड़े बन-ठन के संवर के।

मिलन के अवसर पर क्या छलके हैं?

(क) आंसू।

(ख) हृदय के दुःख।

(ग) मन के पीड़ा भाव।

(घ) पसीने के कण ।

उत्तर (क) आंसू।

प्रश्न 7. पेड़ झुक झाँकने लगे गरदन उचकाये

आंधी चली, धूल भागी घाघरा उठाये

बांकी चितवन उठा, नदी ठिठकी घूंघट सरके

मेघ आये बड़े बन-ठन के संवर के।

नदी ने अपने मुख पर मुख क्या सरका लिया?

(क) घूंघट

(ख) परदा

(ग) घास

(घ) पत्ते

उत्तर (क) घूंघट

प्रश्न 8.बूढ़े पीपल ने बढ़कर आगे जुहार की

बरस बाद सुधि लीन्ही' -

बोली अकुलाई लता ओट हो किवाड़ की

हरसाया ताल लाये पानी परात भर के

मेघ आये बड़े बन-ठन के संवर के।

परात भरकर पानी कौन लाता है?

परिवार का सदस्य परात भरकर पानी क्यों लाता है?

(क) हाथ धोने के लिए।

(ख) मुंह धोने के लिए ।

(ग) चरण धोने के लिए ।

(घ) कपड़े धोने के लिए ।

उत्तर (ग) चरण धोने के लिए ।

प्रश्न 9.बाँध टूटा झर-झर मिलन के अश्रु ढ़रके।

इस पंक्ति में बांध टूटना किस बात को दर्शाता है?

(क) नाराजगी के भाव को।

(ख) कलह समाप्त होने के भाव को।

(ग) वर्षा के होने को।

(घ) प्रेम के मधुर पल का।

उत्तर (ग) वर्षा के होने को।

प्रश्न 10.बांकी चितवन उठा, नदी ठिठकी घूंघट सरके। पंक्ति का अर्थ बताओ?

(क) नदी ने अपना घूंघट नहीं हटाया।

(ख) नदी ठिठकी नहीं है।

(ग) नदी सीधे मेहमान को देख रही है।

(घ) नदी रूपी स्त्री रुक कर अपने घूंघट को हटाकर तिरछी नजरों से मेहमान को देख रही है।

उत्तर (घ) नदी रूपी स्त्री रुक कर अपने घूंघट को हटाकर तिरछी नजरों से मेहमान को देख रही है।

बच्चे काम पर जा रहे हैं- राजेश जोशी

प्रश्न 1.कोहरे से ढ़ँकी सड़क पर बच्चे काम पर जा रहे हैं

सुबह सुबह बच्चे काम पर जा रहे हैं

उपर्युक्त पंक्तियों के अनुसार सड़क किससे ढकी हुई है?

(क) बर्फ से

(ख) धूल से

(ग) कोहरे से

(घ) बच्चों से

उत्तर (ग) कोहरे से

प्रश्न 2.क्या अंतरिक्ष में गिर गई हैं सारी गेंदें

क्या दीमकों ने खा लिया है

सारी रंग बिरंगी किताबों को

क्या काले पहाड़े के नीचे दब गए हैं सारे खिलौने

क्या किसी भूकंप में ढ़ह गई हैं

सारे मदरसों की इमारतें

क्या सारे मैदान, सारे बगीचे और घरों के आँगन

खत्म हो गए हैं एकाएक

तो फिर बचा ही क्या है इस दुनिया में?

सारी रंग बिरंगी किताबों को किसने खा लिया?

(क) दीमको ने ।

(ख) भूकंप में ।

(ग) काले पहाड़ ने ।

(घ) अंतरिक्ष में ।

उत्तर (क) दीमको ने ।

प्रश्न 3..क्या अंतरिक्ष में गिर गई हैं सारी गेंदें

क्या दीमकों ने खा लिया है

सारी रंग बिरंगी किताबों को

क्या काले पहाड़े के नीचे दब गए हैं सारे खिलौने

क्या किसी भूकंप में ढ़ह गई हैं

सारे मदरसों की इमारतें

क्या सारे मैदान, सारे बगीचे और घरों के आँगन

खत्म हो गए हैं एकाएक

तो फिर बचा ही क्या है इस दुनिया में?

सारी गेंदे कहां चली गई

(क) भूकंप में ।

(ख) अंतरिक्ष में।

(ग) दीमक ने खा ली ।

(घ) काले पहाड़ के नीचे दब गई।

उत्तर (ख) अंतरिक्ष में।

प्रश्न 4.क्या अंतरिक्ष में गिर गई हैं सारी गेंदें

क्या दीमकों ने खा लिया है

सारी रंग बिरंगी किताबों को

क्या काले पहाड़े के नीचे दब गए हैं सारे खिलौने

क्या किसी भूकंप में ढ़ह गई हैं

सारे मदरसों की इमारतें

क्या सारे मैदान, सारे बगीचे और घरों के आँगन

खत्म हो गए हैं एकाएक

तो फिर बचा ही क्या है इस दुनिया में?

काले पहाड़ के नीचे क्या दब गए?

(क) मदरसे

(ख) किताबें

(ग) खिलौने

(घ) गेंदे

उत्तर (ग) खिलौने

प्रश्न 5.

सुबह सुबह बच्चे काम पर जा रहे हैं

हमारे समय की सबसे भयानक पंक्ति है यह

भयानक है इसे विवरण की तरह लिखा जाना

लिखा जाना चाहिए इसे सवाल की तरह

काम पर क्यों जा रहे हैं बच्चे

बच्चे कम पर जा रहे हैं इसको किसकी तरह लिखा जाना चाहिए?

(क) विवरण की तरह

(ख) सवाल की तरह

(ग) जवाब की तरह

(घ) पंक्ति की तरह

उत्तर (ख) सवाल की तरह

प्रश्न 6.कोहरे से ढ़ँकी सड़क पर बच्चे काम पर जा रहे हैं

सुबह सुबह बच्चे काम पर जा रहे हैं

हमारे समय की सबसे भयानक पंक्ति है यह

भयानक है इसे विवरण की तरह लिखा जाना

लिखा जाना चाहिए इसे सवाल की तरह

काम पर क्यों जा रहे हैं बच्चे?

कभी सर्दी की एक कोहरे से भरी सुबह को क्या देखकर आश्चर्यचकित हो जाता है?

(क) भूकंप देखकर

(ख) काले पहाड़ को देखकर

(ग) दीमक देखकर

(घ) छोटे बच्चों को काम पर जाता देखकर

उत्तर (घ) छोटे बच्चों को काम पर जाता देखकर

प्रश्न 7.कितना भयानक होता अगर ऐसा होता

भयानक है लेकिन इससे भी ज्यादा यह

कि हैं सारी चीजें हस्बमामूल

पर दुनिया की हजारों सड़कों से गुजरते हुए

बच्चे, बहुत छोटे बच्चे

काम पर जा रहे हैं।

कवि के अनुसार बच्चों का काम पर जाना कैसे स्थित है?

(क) सुखद

(ख) भयानक

(ग) नीरस

(घ) गंभीर

उत्तर (ख) भयानक

प्रश्न 8.कितना भयानक होता अगर ऐसा होता

भयानक है लेकिन इससे भी ज्यादा यह

कि हैं सारी चीजें हस्बमामूल

पर दुनिया की हजारों सड़कों से गुजरते हुए

बच्चे, बहुत छोटे बच्चे

काम पर जा रहे हैं।

सारी चीज खत्म न होकर उससे भी भयानक क्या है?

(क) सारी चीजे मिलना नहीं ।

(ख) सारी चीज़े आसानी से मिल जाना ।

(ग) सारी चीज़े उपलब्ध होकर भी नहीं मिलना।

(घ) थोड़ी मुश्किल से सब मिल जाना

उत्तर (ग) सारी चीज़े उपलब्ध होकर भी नहीं मिलना।

प्रश्न 9.कितना भयानक होता अगर ऐसा होता

भयानक है लेकिन इससे भी ज्यादा यह

कि हैं सारी चीजें हस्बमामूल

पर दुनिया की हजारों सड़कों से गुजरते हुए

बच्चे, बहुत छोटे बच्चे

काम पर जा रहे हैं।

उपयुक्त पंक्ति में हस्बमामूल शब्द का क्या अर्थ है?

(क) अचानक

(ख) करुणा

(ग) यथावत

(घ) भूचाल

उत्तर (ग) यथावत

प्रश्न 10. कितना भयानक होता अगर ऐसा होता

भयानक है लेकिन इससे भी ज्यादा यह

कि हैं सारी चीजें हस्बमामूल

पर दुनिया की हजारों सड़कों से गुजरते हुए

बच्चे, बहुत छोटे बच्चे

काम पर जा रहे हैं।

उपयुक्त पंक्तियों से कवि देश में विद्यमान की समस्या की ओर संकेत कर रहे हैं

(क) श्रमिक वर्ग का शोषण।

(ख) बेरोजगारी

(ग) बाल मजदूरी

(घ) निरक्षरता

उत्तर (ग) बाल मजदूरी

गद्य भाग

दो बैलों की कथा

प्रश्न 1. किंतु गधे को कभी क्रोध करते न सुना ,न देखा जितना चाहो गरीब को मारो ,चाहे जैसी ख़राब , सड़ी हुई घास सामने डाल दो ,उसके चेहरे पर कभी का असंतोष की छाया भी नहीं दिखाई देगी । वैशाख में चाहे एकाध बार कुलेल कर लेता हो ,पर हमने तो उसे कभी खुश होते नहीं देखा । उसके चेहरे पर एक विशाल स्थायी रूप छाया रहता है । सुख दुख लाभ हानि किसी भी दशा में उसे बदलते नहीं देखा । ऋषियों मुनियों के जितने गुण हैं । वे सभी उसमें पराकाष्ठा को पहुंच गए हैं, पर आदमी उसे बेवकूफ कहता है । सद्गुणों का इतना अनादर कहीं नहीं देखा।

गधे के कौन से गुण उसे ऋषियों मुनियों की श्रेणी में खड़ा कर देता है?

(क) परिश्रम

(ख) अध्ययन

(ग) सहनशक्ति

(घ) त्याग

उत्तर (ग) सहनशक्ति

प्रश्न 2.किंतु गधे को कभी क्रोध करते न सुना ,न देखा जितना चाहो गरीब को मारो ,चाहे जैसी ख़राब , सड़ी हुई घास सामने डाल दो ,उसके चेहरे पर कभी का असंतोष की छाया भी नहीं दिखाई देगी । वैशाख में चाहे एकाध बार कुलेल कर लेता हो ,पर हमने तो उसे कभी खुश होते नहीं देखा । उसके चेहरे पर एक विशाल स्थायी रूप छाया रहता है । सुख दुख लाभ हानि किसी भी दशा में उसे बदलते नहीं देखा । ऋषियों मुनियों के जितने गुण हैं । वे सभी उसमें पराकाष्ठा को पहुंच गए हैं, पर आदमी उसे बेवकूफ कहता है । सद्गुणों का इतना अनादर कहीं नहीं देखा।

उपर्युक्त गद्यांश के आधार पर बताइए कि किसके गुणों का अनादर हो रहा है?

(क) बैल

(ख) गधा

(ग) कुत्ता

(घ)ऋषियों के

उत्तर (ख) गधा

प्रश्न 3.किंतु गधे को कभी क्रोध करते न सुना ,न देखा जितना चाहो गरीब को मारो ,चाहे जैसी ख़राब , सड़ी हुई घास सामने डाल दो ,उसके चेहरे पर कभी का असंतोष की छाया भी नहीं दिखाई देगी । वैशाख में चाहे एकाध बार कुलेल कर लेता हो ,पर हमने तो उसे कभी खुश होते नहीं देखा । उसके चेहरे पर एक विशाल स्थायी रूप छाया रहता है । सुख दुख लाभ हानि किसी भी दशा में उसे बदलते नहीं देखा । ऋषियों मुनियों के जितने गुण हैं । वे सभी उसमें पराकाष्ठा को पहुंच गए हैं, पर आदमी उसे बेवकूफ कहता है ।

प्रयुक्त गद्यांश के आधार पर वैशाख में एकाध बार कुलेल कौन करता है?

(क) कुत्ता

(ख) गधा

(ग) ऋषि

(घ) मुनि

उत्तर (ख) गधा

प्रश्न 4.किंतु गधे को कभी क्रोध करते न सुना ,न देखा जितना चाहो गरीब को मारो ,चाहे जैसी ख़राब , सड़ी हुई घास सामने डाल दो ,उसके चेहरे पर कभी का असंतोष की छाया भी नहीं दिखाई देगी । वैशाख में चाहे एकाध बार कुलेल कर लेता हो ,पर हमने तो उसे कभी खुश होते नहीं देखा । उसके चेहरे पर एक विशाल स्थायी रूप छाया रहता है । सुख दुख लाभ हानि किसी भी दशा में उसे बदलते नहीं देखा । ऋषियों मुनियों के जितने गुण हैं । वे सभी उसमें पराकाष्ठा को पहुंच गए हैं, पर आदमी उसे बेवकूफ कहता है ।

प्रयुक्त गद्यांश के आधार पर गधे के चेहरे पर क्या नहीं देखा गया है?

(क) संतोष

(ख) दुःखी

(ग) असंतोष

(घ) शांति

उत्तर (ग) असंतोष

प्रश्न 5. झुरी काछी के दोनों बैलों के नाम थे हीरा और मोती ।दोनों पछाई जाति के थे देखने में सुंदर , काम में चौकस , डील में ऊंचे । बहुत दिनों साथ रहते रहते दोनों में भाईचारा हो गया था । दोनों आमने-सामने या आस पास बैठे हुए एक दूसरे को मूक भाषा में विचार विनिमय करते थे। एक दूसरे के मन की बात कैसे समझ जाता था, हम कह सकते । अवश्य ही उनमें कोई ऐसी गुप्त शक्ति थी , जिसे जीवो में श्रेष्ठता का दावा करने वाला मनुष्य वंचित था।

झुरी काछी के दोनों बैलों के बैलों के क्या नाम थे?

(क) हीरा पन्ना

(ख) मोती पन्ना

(ग) हीरा और मोती

(घ) हीरा और लाल

उत्तर (ग) हीरा और मोती

प्रश्न 6. झुरी काछी के दोनों बैलों के नाम थे हीरा और मोती ।दोनों पछाई जाति के थे देखने में सुंदर , काम में चौकस , डील में ऊंचे । बहुत दिनों साथ रहते रहते दोनों में भाईचारा हो गया था । दोनों आमने-सामने या आस पास बैठे हुए एक दूसरे को मूक भाषा में विचार विनिमय करते थे। एक दूसरे के मन की बात कैसे समझ जाता था, हम कह सकते । अवश्य ही उनमें कोई ऐसी गुप्त शक्ति थी , जिसे जीवो में श्रेष्ठता का दावा करने वाला मनुष्य वंचित था।

हीरा और मोती किस जाति के बल थे?

(क) श्रेष्ठ

(ख) शक्ति

(ग) पछाई

(घ) चौकस

उत्तर (ग) पछाई

प्रश्न 7. लेकिन गधे का एक छोटा भाई और भी है , जो उस कम ही गधा है , और वह है बैल । जिस अर्थ में हम गधे का प्रयोग करते हैं , कुछ उसी से मिलते जुलते अर्थ में बछिया के ताऊ का भी प्रयोग करते हैं।

उपयुक्त पंक्तियों में बछिया के ताऊ का प्रयोग किसके लिए किया गया है

(क) कुत्ता ।

(ख) गधा ।

(ग) बैल ।

(घ) पिताजी के बड़े भाई के लिए।

उत्तर (ग) बैल ।

प्रश्न 8. घर और गांव की लड़के जमा हो गए और तालियां बजा बजाकर उनका स्वागत करने लगे। गांव के इतिहास में यह घटना अभूतपूर्व न होने पर महत्वपूर्ण थी। बाल सभा ने निश्चय किया ,दोनों पशु वीरों को अभिनंदन पत्र देना चाहिए । कोई अपने घर से रोटियां लाया ,कोई गुड़,कोई चोकर ,कोई भूसी।

गांव के इतिहास में कौन सी घटना अभूतपूर्व थी?

(क) बैलों का नाचना।

(ख) बैलों का भागना।

(ग) बैलों का खेत जोतना।

(घ) बैलों का अपने आप घर आ जाना।

उत्तर (घ) बैलों का अपने आप घर आ जाना।

प्रश्न 9. घर और गांव की लड़के जमा हो गए और तालियां बजा बजाकर उनका स्वागत करने लगे। गांव के इतिहास में यह घटना अभूतपूर्व न होने पर महत्वपूर्ण थी। बाल सभा ने निश्चय किया ,दोनों पशु वीरों को अभिनंदन पत्र देना चाहिए । कोई अपने घर से रोटियां लाया ,कोई गुड़,कोई चोकर ,कोई भूसी।

उपयुक्त गद्यांश के आधार पर बाल सभा ने क्या निश्चय किया?

(क) बैलों को भूसी लाकर देना।

(ख) बैलों को रोटी लाकर देना।

(ग) बैलों को अभिनंदन पत्र देना।

(घ) बैलों को गुड़ लाकर देना।

उत्तर (ग) बैलों को अभिनंदन पत्र देना।

प्रश्न 10.घर और गांव की लड़के जमा हो गए और तालियां बजा बजाकर उनका स्वागत करने लगे। गांव के इतिहास में यह घटना अभूतपूर्व न होने पर महत्वपूर्ण थी। बाल सभा ने निश्चय किया ,दोनों पशु वीरों को अभिनंदन पत्र देना चाहिए । कोई अपने घर से रोटियां लाया ,कोई गुड़,कोई चोकर ,कोई भूसी।

उपयुक्त गद्यांश के आधार पर बाल सभा ने बैलों को लाकर क्या-क्या दिया?

(क) भूसी और चोकर।

(ख) भूसी और आटा।

(ग) गुड़ और चने।

(घ) मिठाई।

उत्तर (क) भूसी और चोकर।

ल्हासा की ओर

प्रश्न 1. नेपाल से तिब्बत जाने का मुख्य रास्ता है । फरी कलिंड़पोंड का रास्ता जब नहीं खुला था , तो नेपाल ही नहीं हिंदुस्तान की भी चीज इसी रास्ते तिब्बत जाया करती थी । यह व्यापारिक ही नहीं, सैनिक रास्ता भी था । इसलिए जगह-जगह फौजी चौकिया और किले बने हुए हैं, जिसमें कभी चीनी पलटन रहा करती थी । आजकल बहुत से फौजी मकान गिर चुके हैं। दुर्ग के किसी भाग में , जहां किसानों ने अपना बसेरा बना लिया है , वहां घर कुछ आबाद दिखाई पड़ते हैं । ऐसा ही परित्यक्त एक चीनी था । हम वहां चाय पीने के लिए ठहरे। तिब्बत में यात्रियों के लिए बहुत सी तकलीफें भी हैं और कुछ आराम की बातें भी वहां जाति पांती , छुआछूत का सवाल ही नहीं हैं और न औरतें परदा ही करती है।

उपयुक्त गद्यांश के आधार पर बताइए कि तिब्बत की मार्ग में क्या-क्या है?

(क) विकसित दुर्ग

(ख) फ़ौजी चौकियों

(ग) अच्छे मकान

(घ) अच्छी अवस्था में किले

उत्तर (ख) फ़ौजी चौकियों

प्रश्न 2. नेपाल से तिब्बत जाने का मुख्य रास्ता है । फरी कलिंड़पोंड का रास्ता जब नहीं खुला था , तो नेपाल ही नहीं हिंदुस्तान की भी चीज इसी रास्ते तिब्बत जाया करती थी । यह व्यापारिक ही नहीं, सैनिक रास्ता भी था । इसलिए जगह-जगह फौजी चौकिया और किले बने हुए हैं, जिसमें कभी चीनी पलटन रहा करती थी । आजकल बहुत से फौजी मकान गिर चुके हैं। दुर्ग के किसी भाग में , जहां किसानों ने अपना बसेरा बना लिया है , वहां घर कुछ आबाद दिखाई पड़ते हैं । ऐसा ही परित्यक्त एक चीनी था । हम वहां चाय पीने के लिए ठहरे। तिब्बत में यात्रियों के लिए बहुत सी तकलीफें भी हैं और कुछ आराम की बातें भी वहां जाति पांती , छुआछूत का सवाल ही नहीं हैं और न औरतें परदा ही करती है।

उपयुक्त गद्यांश के आधार पर बताइए कि तिब्बती समाज कैसा था?

(क) परदा प्रथा थी।

(ख) छुआछुत थी।

(ग) छुआछुत और परदा प्रथा नहीं थीं।

(घ) जाति पांति का भेदभाव था।

उत्तर (ग) छुआछुत और परदा प्रथा नहीं थीं।

प्रश्न 3.नेपाल से तिब्बत जाने का मुख्य रास्ता है । फरी कलिंड़पोंड का रास्ता जब नहीं खुला था ,तो नेपाल ही नहीं हिंदुस्तान की भी चीज इसी रास्ते तिब्बत जाया करती थी । यह व्यापारिक ही नहीं, सैनिक रास्ता भी था । इसलिए जगह-जगह फौजी चौकिया और किले बने हुए हैं, जिसमें कभी चीनी पलटन रहा करती थी । आजकल बहुत से फौजी मकान गिर चुके हैं। दुर्ग के किसी भाग में ,जहां किसानों ने अपना बसेरा बना लिया है ,वहां घर कुछ आबाद दिखाई पड़ते हैं । ऐसा ही परित्यक्त एक चीनी था । हम वहां चाय पीने के लिए ठहरे। तिब्बत में यात्रियों के लिए बहुत सी तकलीफें भी हैं और कुछ आराम की बातें भी वहां जाति पांती ,छुआछूत का सवाल ही नहीं हैं और न औरतें परदा ही करती है।

उपयुक्त गद्यांश के आधार पर बताइए कि जब फरी कलिंड़पोंड का रास्ता नहीं खुला था तब तिब्बत जाने का रास्ता कौनसा था?

(क) भूटान से होकर

(ख) चीन से होकर

(ग) सिक्किम से होकर

(घ) नेपाल से होकर

उत्तर (घ) नेपाल से होकर

प्रश्न 4.नेपाल से तिब्बत जाने का मुख्य रास्ता है । फरी कलिंड़पोंड का रास्ता जब नहीं खुला था ,तो नेपाल ही नहीं हिंदुस्तान की भी चीज इसी रास्ते तिब्बत जाया करती थी । यह व्यापारिक ही नहीं, सैनिक रास्ता भी था । इसलिए जगह-जगह फौजी चौकिया और किले बने हुए हैं, जिसमें कभी चीनी पलटन रहा करती थी । आजकल बहुत से फौजी मकान गिर चुके हैं। दुर्ग के किसी भाग में ,जहां किसानों ने अपना बसेरा बना लिया है ,वहां घर कुछ आबाद दिखाई पड़ते हैं । ऐसा ही परित्यक्त एक चीनी था । हम वहां चाय पीने के लिए ठहरे। तिब्बत में यात्रियों के लिए बहुत सी तकलीफें भी हैं और कुछ आराम की बातें भी वहां जाति पांती ,छुआछूत का सवाल ही नहीं हैं और न औरतें परदा ही करती है।

उपयुक्त गद्यांश के आधार पर बताइए कि रास्ते में बने दुर्ग पर किसने बसेरा कर लिया?

(क) सैनिकों ने

(ख) चीनियों ने

(ग) नेपाल के लोगो ने

(घ) किसानों ने

उत्तर (घ) किसानों ने

प्रश्न 5.नेपाल से तिब्बत जाने का मुख्य रास्ता है । फरी कलिंड़पोंड का रास्ता जब नहीं खुला था ,तो नेपाल ही नहीं हिंदुस्तान की भी चीज इसी रास्ते तिब्बत जाया करती थी । यह व्यापारिक ही नहीं, सैनिक रास्ता भी था । इसलिए जगह-जगह फौजी चौकिया और किले बने हुए हैं, जिसमें कभी चीनी पलटन

रहा करती थी । आजकल बहुत से फौजी मकान गिर चुके हैं। दुर्ग के किसी भाग में ,जहां किसानों ने अपना बसेरा बना लिया है ,वहां घर कुछ आबाद दिखाई पड़ते हैं । ऐसा ही परित्यक्त एक चीनी था । हम वहां चाय पीने के लिए ठहरे। तिब्बत में यात्रियों के लिए बहुत सी तकलीफें भी हैं और कुछ आराम की बातें भी वहां जाति पांती ,छुआछूत का सवाल ही नहीं हैं और न औरतें परदा ही करती है।

उपयुक्त गद्यांश के आधार पर बताइए कि परित्यक्त शब्द का अर्थ है?

(क) जो गृहण कर लिया हो।

(ख) जो त्याग दिया गया हो।

(ग) जो पास में हो।

(घ) को कहीं भी नहीं हो।

उत्तर (ख) जो त्याग दिया गया हो।

प्रश्न 6. तिब्बत के गांव में आकर खून हो जाए ,तब तो खूनी को सजा भी मिल सकती है ,लेकिन इन निर्जन स्थान में मरे हुए आदमियों के लिए कोई परवाह नहीं करता। सरकार खुफिया विभाग और पुलिस पर उतना खर्च नहीं करती और वहां गवाह भी तो कोई नहीं मिल सकता । डकैत पहले आदमी को मार डालते हैं उसके बाद देखते हैं कि कुछ पैसा है कि नहीं ।हथियार का कानून न रहने के कारण यहां लाठी की तरह लोग पिस्तोल ,बंदूक लिए फिरते हैं । डाकू यदि जान से न मारे ,तो खुद उसे अपने प्राणों का खतरा है । गांव में हमें मालूम हुआ कि पिछले ही साल थोड़ला के पास खून हो गया । शायद खून की हम उतनी परवाह नहीं करते ,क्योंकि हम भीखमंगे थे जहां कहीं वैसी सूरत देखते ,टोपी उतार जीप निकाल ,कूची कूची (दया दया)एक पैसा' कहते भीख मांगने लगते। लेकिन पहाड़ की ऊंची चढ़ाई थी, पीठ पर सामान लादकर कैसे चलते ?और अगली पड़ाव अगला पढ़ाओ 16-17 मील से कम नहीं था । मैंने सुमति से कहा कि यहां से लड़कोंर तक के लिए दो घोड़े कर लो ,सामान भी रख लेंगे और चढ़े चलेंगे।

लेखक ने डाकुओं से बचाव के लिए कौन सा साधन अपनाया?

(क) डाकुओं का वेश धारण किया।

(ख) सामान ही भी लेकर गए।

(ग) घोड़े पर चढ़कर चले गए।

(घ) भिखमंगो का वेश धारण किया।

उत्तर (घ) भिखमंगो का वेश धारण किया।

प्रश्न 7.. तिब्बत के गांव में आकर खून हो जाए ,तब तो खूनी को सजा भी मिल सकती है ,लेकिन इन निर्जन स्थान में मरे हुए आदमियों के लिए कोई परवाह नहीं करता। सरकार खुफिया विभाग और पुलिस पर उतना खर्च नहीं करती और वहां गवाह भी तो कोई नहीं मिल सकता । डकैत पहले आदमी को मार डालते हैं उसके बाद देखते हैं कि कुछ पैसा है कि नहीं ।हथियार का कानून न रहने के कारण यहां लाठी की तरह लोग पिस्तोल ,बंदूक लिए फिरते हैं । डाकू यदि जान से न मारे ,तो खुद उसे अपने प्राणों का खतरा है । गांव में हमें मालूम हुआ कि पिछले ही साल थोड़ला के पास खून हो गया । शायद खून की

हम उतनी परवाह नहीं करते ,क्योंकि हम भीखमंगे थे जहां कहीं वैसी सूरत देखते ,टोपी उतार जीप निकाल ,कूची कूची (दया दया)एक पैसा' कहते भीख मांगने लगते। लेकिन पहाड़ की ऊंची चढ़ाई थी, पीठ पर सामान लादकर कैसे चलते ?और अगली पड़ाव अगला पढ़ाओ 16 - 17 मील से कम नहीं था । मैंने सुमति से कहा कि यहां से लड़कोंर तक के लिए दो घोड़े कर लो ,सामान भी रख लेंगे और चढ़े चलेंगे।

लेखक का अगला पड़ाव कितनी दूर था?

(क) 15 - 16 मील

(ख) 16 - 17 मील

(ग) 17 - 18 मील

(घ) 18 - 19 मील

उत्तर (ख) 16 - 17 मील

प्रश्न 8. तिब्बत के गांव में आकर खून हो जाए ,तब तो खूनी को सजा भी मिल सकती है ,लेकिन इन निर्जन स्थान में मरे हुए आदमियों के लिए कोई परवाह नहीं करता। सरकार खुफिया विभाग और पुलिस पर उतना खर्च नहीं करती और वहां गवाह भी तो कोई नहीं मिल सकता । डकैत पहले आदमी को मार डालते हैं उसके बाद देखते हैं कि कुछ पैसा है कि नहीं ।हथियार का कानून न रहने के कारण यहां लाठी की तरह लोग पिस्तोल ,बंदूक लिए फिरते हैं । डाकू यदि जान से न मारे ,तो खुद उसे अपने प्राणों का खतरा है । गांव में हमें मालूम हुआ कि पिछले ही साल थोड़ला के पास खून हो गया । शायद खून की हम उतनी परवाह नहीं करते ,क्योंकि हम भीखमंगे थे जहां कहीं वैसी सूरत देखते ,टोपी उतार जीप निकाल ,कूची कूची (दया दया)एक पैसा' कहते भीख मांगने लगते। लेकिन पहाड़ की ऊंची चढ़ाई थी, पीठ पर सामान लादकर कैसे चलते ?और अगली पड़ाव अगला पढ़ाओ 16 - 17 मील से कम नहीं था । मैंने सुमति से कहा कि यहां से लड़कोंर तक के लिए दो घोड़े कर लो ,सामान भी रख लेंगे और चढ़े चलेंगे।

लेखक और उनके दोस्त डाकुओं का सामना हो जाने पर क्या करते थे ?

(क) कूची कूची करके भीख मांगने लगते।

(ख) खूफिया विभाग से संपर्क करते।

(ग) टोपी उतार कर पैसे दे देते थे।

(घ) डाकू को मार देते थे।

उत्तर (क) कूची कूची करके भीख मांगने लगते।

प्रश्न9. तिब्बत के गांव में आकर खून हो जाए ,तब तो खूनी को सजा भी मिल सकती है ,लेकिन इन निर्जन स्थान में मरे हुए आदमियों के लिए कोई परवाह नहीं करता। सरकार खुफिया विभाग और पुलिस पर उतना खर्च नहीं करती और वहां गवाह भी तो कोई नहीं मिल सकता । डकैत पहले आदमी को मार डालते हैं उसके बाद देखते हैं कि कुछ पैसा है कि नहीं ।हथियार का कानून न रहने के कारण यहां लाठी

की तरह लोग पिस्तोल ,बंदूक लिए फिरते हैं । डाकू यदि जान से न मारे ,तो खुद उसे अपने प्राणों का खतरा है । गांव में हमें मालूम हुआ कि पिछले ही साल थोड़ला के पास खून हो गया । शायद खून की हम उतनी परवाह नहीं करते ,क्योंकि हम भीखमंगे थे जहां कहीं वैसी सूरत देखते ,टोपी उतार जीप निकाल ,कूची कूची (दया दया)एक पैसा' कहते भीख मांगने लगते। लेकिन पहाड़ की ऊंची चढ़ाई थी, पीठ पर सामान लादकर कैसे चलते ?और अगली पड़ाव अगला पढ़ाओ 16-17 मील से कम नहीं था । मैंने सुमति से कहा कि यहां से लड़कोंर तक के लिए दो घोड़े कर लो ,सामान भी रख लेंगे और चढ़े चलेंगे।

लेखक को गांव वालों ने कहां पर खून होने की बात बताई?

(क) निर्जन जंगल में ।

(ख) थोड़ला नामक स्थान पर।

(ग) गांव में

(घ) तिब्बत में

उत्तर (ख) थोड़ला नामक स्थान पर।

प्रश्न 10. तिब्बत के गांव में आकर खून हो जाए ,तब तो खूनी को सजा भी मिल सकती है ,लेकिन इन निर्जन स्थान में मरे हुए आदमियों के लिए कोई परवाह नहीं करता। सरकार खुफिया विभाग और पुलिस पर उतना खर्च नहीं करती और वहां गवाह भी तो कोई नहीं मिल सकता । डकैत पहले आदमी को मार डालते हैं उसके बाद देखते हैं कि कुछ पैसा है कि नहीं ।हथियार का कानून न रहने के कारण यहां लाठी की तरह लोग पिस्तोल ,बंदूक लिए फिरते हैं । डाकू यदि जान से न मारे ,तो खुद उसे अपने प्राणों का खतरा है । गांव में हमें मालूम हुआ कि पिछले ही साल थोड़ला के पास खून हो गया । शायद खून की हम उतनी परवाह नहीं करते ,क्योंकि हम भीखमंगे थे जहां कहीं वैसी सूरत देखते ,टोपी उतार जीप निकाल ,कूची कूची (दया दया)एक पैसा' कहते भीख मांगने लगते। लेकिन पहाड़ की ऊंची चढ़ाई थी, पीठ पर सामान लादकर कैसे चलते ?और अगली पड़ाव अगला पढ़ाओ 16-17 मील से कम नहीं था । मैंने सुमति से कहा कि यहां से लड़कोंर तक के लिए दो घोड़े कर लो ,सामान भी रख लेंगे और चढ़े चलेंगे।

घोडे का तत्सम रूप क्या है?

(क) गड़ा

(ख) घोटक

(ग) गर्दभ

(घ) घड़ियाल

उत्तर (ख) घोटक

उपभोक्ता वाद की संस्कृति

प्रश्न 1. संभ्रात महिलाओं की ड्रेसिंग टेबल पर तीस तीस हजार की सौंदर्य सामग्री होना तो मामूली बात है। पेरिस से परफ्यूम मंगाइए ,इतना ही और खर्च हो जाएगा । यह प्रतिष्ठा चिन्ह है, समाज में आपकी

हैसियत जताते हैं । पुरुष भी इस दौड़ में पीछे नहीं है । पहले उनका काम साबुन और तेल से चल जाता था। आफ्टर शेव और कोलोन बाद में आए । अब तो इस सूची में दर्जन दो दर्जन चीज़े और जुड़ गई हैं ।

संभ्रात महिलाओं की ड्रेसिंग टेबल पर हजारों सौंदर्य सामग्री होना कैसी बात है?

(क) असंभव

(ख) आश्चर्यजनक

(ग) मामूली

(घ) अविश्वसनीय

उत्तर (ग) मामूली

प्रश्न 2. संभ्रात महिलाओं की ड्रेसिंग टेबल पर तीस तीस हजार की सौंदर्य सामग्री होना तो मामूली बात है। पेरिस से परफ्यूम मंगाइए ,इतना ही और खर्च हो जाएगा । यह प्रतिष्ठा चिन्ह है, समाज में आपकी हैसियत जताते हैं । पुरुष भी इस दौड़ में पीछे नहीं है । पहले उनका काम साबुन और तेल से चल जाता था। आफ्टर शेव और कोलोन बाद में आए । अब तो इस सूची में दर्जन दो दर्जन चीज़े और जुड़ गई हैं ।

लोग पेरिस से परफ्यूम क्यों मंगाते हैं?

(क) प्रतिष्ठा के लिए ।

(ख) शौक के लिए।

(ग) सौंदर्य के लिए ।

(घ) दिखावे के लिए ।

उत्तर (क) प्रतिष्ठा के लिए ।

प्रश्न 3. संभ्रात महिलाओं की ड्रेसिंग टेबल पर तीस तीस हजार की सौंदर्य सामग्री होना तो मामूली बात है। पेरिस से परफ्यूम मंगाइए ,इतना ही और खर्च हो जाएगा । यह प्रतिष्ठा चिन्ह है, समाज में आपकी हैसियत जताते हैं । पुरुष भी इस दौड़ में पीछे नहीं है । पहले उनका काम साबुन और तेल से चल जाता था। आफ्टर शेव और कोलोन बाद में आए । अब तो इस सूची में दर्जन दो दर्जन चीज़े और जुड़ गई हैं ।

संभ्रात महिलाओं से क्या आशय है?

(क) छोटे परिवारों से संबंधित महिलाएं।

(ख) गरीब परिवारों से संबंधित महिलाएं।

(ग) संपन्न परिवारों से संबंधित महिलाएं।

(घ) घरेलू परिवारों से संबंधित महिलाएं

उत्तर (ग) संपन्न परिवारों से संबंधित महिलाएं।

प्रश्न 4. संभ्रात महिलाओं की ड्रेसिंग टेबल पर तीस तीस हजार की सौंदर्य सामग्री होना तो मामूली बात है। पेरिस से परफ्यूम मंगाइए , इतना ही और खर्च हो जाएगा । यह प्रतिष्ठा चिन्ह है, समाज में आपकी हैसियत जताते हैं । पुरुष भी इस दौड़ में पीछे नहीं है । पहले उनका काम साबुन और तेल से चल जाता था। आफ्टर शेव और कोलोन बाद में आए । अब तो इस सूची में दर्जन दो दर्जन चीज़े और जुड़ गई हैं ।

पहले पुरुष का काम किस से चल जाता था?

(क) साबुन और तेल से।

(ख) शैंपू और आफ्टर शेव से।

(ग) क्रीम और लोशन से।

(घ) परफ्यूम से ।

उत्तर (क) साबुन और तेल से।

प्रश्न 5.. संभ्रात महिलाओं की ड्रेसिंग टेबल पर तीस तीस हजार की सौंदर्य सामग्री होना तो मामूली बात है। पेरिस से परफ्यूम मंगाइए , इतना ही और खर्च हो जाएगा । यह प्रतिष्ठा चिन्ह है, समाज में आपकी हैसियत जताते हैं । पुरुष भी इस दौड़ में पीछे नहीं है । पहले उनका काम साबुन और तेल से चल जाता था। आफ्टर शेव और कोलोन बाद में आए । अब तो इस सूची में दर्जन दो दर्जन चीज़े और जुड़ गई हैं ।

प्रतिष्ठा चिन्ह का क्या आशय है?

(क) घमंड की बात।

(ख) धैर्य की बात ।

(ग) मान सम्मान की बात।

(घ) सहनशीलता की बात।

उत्तर (ग) मान सम्मान की बात।

प्रश्न 6. यह गंभीर और चिंता का विषय है । हमारे सीमित संसाधनों का घोर अपव्यय हो रहा है । जीवन की गुणवत्ता आलू के चिप्स से नहीं सुधरती, न बहु विज्ञापित शीतल पेयो से । भले ही भी अंतरराष्ट्रीय

पिज़्ज़ा और बर्गर कितनी ही आधुनिक हो। है वह कूड़ा खाद्य। समाज में वर्गों की दूरी बढ़ रही है । सामाजिक सरोकारों में कमी आ रही है ।जीवन स्तर का यह बढ़ता अंतर आक्रोश और अशांति को जन्म दे रहा है । जैसे-जैसे दिखावे की संस्कृति फैलेगी सामाजिक अशांति भी बढ़ेगी ।हमारी सांस्कृतिक अस्मिता का ह्रास तो हो ही रहा है । हम लक्ष्य भ्रम से भी पीड़ित है । विकास की विराट उद्देश्य पीछे हट रहे हैं ।हम झूठी तुष्टि के तात्कालिक लक्ष्यों का पीछा कर रहे हैं । मर्यादाए ही टूट रही है। नैतिक मानदंड ढीले पड़ रहे हैं ।व्यक्ति केंद्रिकता बढ़ रही है ।स्वार्थ परमार्थ पर हावी हो रहा है ।भोग की आकांक्षाएं आसमान को छू रही है किसी बिंदु पर रुकेगी यह दौड़।

लेखक ने किसके अपव्यय की बात कहीं है?

(क) संसाधनों के।

(ख) भोज्य पदार्थों के।

(ग) सीमित संसाधनों के।

(घ) शीतल पेयों के ।

उत्तर (ग) सीमित संसाधनों के।

प्रश्न 7. यह गंभीर और चिंता का विषय है । हमारे सीमित संसाधनों का घोर अपव्यय हो रहा है । जीवन की गुणवत्ता आलू के चिप्स से नहीं सुधरती, न बहु विज्ञापित शीतल पेयो से । भले ही भी अंतरराष्ट्रीय पिज़्ज़ा और बर्गर कितनी ही आधुनिक हो। है वह कूड़ा खाद्य। समाज में वर्गों की दूरी बढ़ रही है । सामाजिक सरोकारों में कमी आ रही है ।जीवन स्तर का यह बढ़ता अंतर आक्रोश और अशांति को जन्म दे रहा है । जैसे-जैसे दिखावे की संस्कृति फैलेगी सामाजिक अशांति भी बढ़ेगी ।हमारी सांस्कृतिक अस्मिता का ह्रास तो हो ही रहा है । हम लक्ष्य भ्रम से भी पीड़ित है । विकास की विराट उद्देश्य पीछे हट रहे हैं ।हम झूठी तुष्टि के तात्कालिक लक्ष्यों का पीछा कर रहे हैं । मर्यादाए ही टूट रही है। नैतिक मानदंड ढीले पड़ रहे हैं ।व्यक्ति केंद्रिकता बढ़ रही है ।स्वार्थ परमार्थ पर हावी हो रहा है ।भोग की आकांक्षाएं आसमान को छू रही है किसी बिंदु पर रुकेगी यह दौड़।

लेखक किसे कूड़ा खाद्य पदार्थ मानता है?

(क) समोसा ब्रेड।

(ख) छोले भटूरे।

(ग) पिज़्ज़ा बर्गर।

(घ) चाउमीन

उत्तर (ग) पिज़्ज़ा बर्गर।

प्रश्न 8. यह गंभीर और चिंता का विषय है । हमारे सीमित संसाधनों का घोर अपव्यय हो रहा है । जीवन की गुणवत्ता आलू के चिप्स से नहीं सुधरती, न बहु विज्ञापित शीतल पेयो से । भले ही भी अंतरराष्ट्रीय

पिज़्ज़ा और बर्गर कितनी ही आधुनिक हो। है वह कूड़ा खाद्य। समाज में वर्गों की दूरी बढ़ रही है । सामाजिक सरोकारों में कमी आ रही है ।जीवन स्तर का यह बढ़ता अंतर आक्रोश और अशांति को जन्म दे रहा है । जैसे-जैसे दिखावे की संस्कृति फैलेगी सामाजिक अशांति भी बढ़ेगी ।हमारी सांस्कृतिक अस्मिता का ह्रास तो हो ही रहा है । हम लक्ष्य भ्रम से भी पीड़ित है । विकास की विराट उद्देश्य पीछे हट रहे हैं ।हम झूठी तुष्टि के तात्कालिक लक्ष्यों का पीछा कर रहे हैं । मर्यादाए ही टूट रही है। नैतिक मानदंड ढीले पड़ रहे हैं ।व्यक्ति केंद्रिकता बढ़ रही है ।स्वार्थ परमार्थ पर हावी हो रहा है ।भोग की आकांक्षाएं आसमान को छू रही है किसी बिंदु पर रुकेगी यह दौड़।

आक्रोश और अशांति को कौन जन्म दे रहा है?

(क) जीवन स्तर का बढ़ता अंतर।

(ख) दिखावे की संस्कृति।

(ग) बढ़ता जीवन स्तर।

(घ) आपसी भेद भाव।

उत्तर (क) जीवन स्तर का बढ़ता अंतर।

प्रश्न 9. यह गंभीर और चिंता का विषय है । हमारे सीमित संसाधनों का घोर अपव्यय हो रहा है । जीवन की गुणवत्ता आलू के चिप्स से नहीं सुधरती, न बहु विज्ञापित शीतल पेयो से । भले ही भी अंतरराष्ट्रीय पिज़्ज़ा और बर्गर कितनी ही आधुनिक हो। है वह कूड़ा खाद्य। समाज में वर्गों की दूरी बढ़ रही है । सामाजिक सरोकारों में कमी आ रही है ।जीवन स्तर का यह बढ़ता अंतर आक्रोश और अशांति को जन्म दे रहा है । जैसे-जैसे दिखावे की संस्कृति फैलेगी सामाजिक अशांति भी बढ़ेगी ।हमारी सांस्कृतिक अस्मिता का ह्रास तो हो ही रहा है । हम लक्ष्य भ्रम से भी पीड़ित है । विकास की विराट उद्देश्य पीछे हट रहे हैं ।हम झूठी तुष्टि के तात्कालिक लक्ष्यों का पीछा कर रहे हैं । मर्यादाए ही टूट रही है। नैतिक मानदंड ढीले पड़ रहे हैं ।व्यक्ति केंद्रिकता बढ़ रही है ।स्वार्थ परमार्थ पर हावी हो रहा है ।भोग की आकांक्षाएं आसमान को छू रही है किसी बिंदु पर रुकेगी यह दौड़।

आज सांस्कृतिक अस्मिता की क्या स्थिति है?

(क) सांस्कृतिक अस्मिता का विकास हो रहा है।

(ख) सांस्कृतिक अस्मिता का पतन हो रहा है।

(ग) सांस्कृतिक अस्मिता स्थिर है।

(घ) सांस्कृतिक अस्मिता का ह्रास हो रहा है।

उत्तर (घ) सांस्कृतिक अस्मिता का ह्रास हो रहा है।

प्रश्न 10. यह गंभीर और चिंता का विषय है । हमारे सीमित संसाधनों का घोर अपव्यय हो रहा है । जीवन की गुणवत्ता आलू के चिप्स से नहीं सुधरती, न बहु विज्ञापित शीतल पेयो से । भले ही भी अंतरराष्ट्रीय पिज़्ज़ा और बर्गर कितनी ही आधुनिक हो। है वह कूड़ा खाद्य। समाज में वर्गों की दूरी बढ़ रही है । सामाजिक सरोकारों में कमी आ रही है ।जीवन स्तर का यह बढ़ता अंतर आक्रोश और अशांति को जन्म दे रहा है । जैसे-जैसे दिखावे की संस्कृति फैलेगी सामाजिक अशांति भी बढ़ेगी ।हमारी सांस्कृतिक अस्मिता का ह्रास तो हो ही रहा है । हम लक्ष्य भ्रम से भी पीड़ित है । विकास की विराट उद्देश्य पीछे हट रहे हैं ।हम झूठी तुष्टि के तात्कालिक लक्ष्यों का पीछा कर रहे हैं । मर्यादाए ही टूट रही है। नैतिक मानदंड ढीले पड़ रहे हैं ।व्यक्ति केंद्रिकता बढ़ रही है ।स्वार्थ परमार्थ पर हावी हो रहा है ।भोग की आकांक्षाएं आसमान को छू रही है किसी बिंदु पर रुकेगी यह दौड़।

हम किन हम किन लक्ष्यो का पीछा कर रहे हैं।

(क) हम झूठी तुष्टि के लक्ष्यों का पीछा कर रहे हैं।

(ख) हम तात्कालिक लक्ष्यों का पीछा कर रहे हैं।

(ग) हम विकास के लक्ष्यों का पीछा कर रहे है।

(घ) हम ह्रास के लक्ष्यों का पीछा कर रहे हैं।

उत्तर (क) हम झूठी तुष्टि के लक्ष्यों का पीछा कर रहे हैं।

सांवले सपनो की याद

प्रश्न 1. जटिल प्राणियों के लिए सालीम अली हमेशा एक पहेली बने रहेंगे । बचपन के दिनों में ,उनकी एयरगन से घायल होकर गिरने वाली ,नीले कंठ की वह गौरेया सारी जिंदगी उन्हें खोज के नए-नए रास्तों की तरफ ले जाती रही । जिंदगी की ऊंचाइयों में उनका विश्वास एक क्षण के लिए भी डिगा नहीं । वह लॉरेंस की तरह नैसर्गिक जिंदगी का प्रतिरूप बन गए थे। सालीम अली प्रकृति की दुनिया में एक टापू बनने की बजाय तथा सागर बनकर उभरे।

सालीम अली सदा एक पहेली बने रहेंगे?

(क) वन्य प्राणियों के लिए।

(ख) जटिल प्राणियों के लिए।

(ग) मित्रों के लिए।

(घ) परिजनों के लिए।

उत्तर (ख) जटिल प्राणियों के लिए।

प्रश्न 2. जटिल प्राणियों के लिए सालीम अली हमेशा एक पहेली बने रहेंगे । बचपन के दिनों में ,उनकी एयरगन से घायल होकर गिरने वाली ,नीले कंठ की वह गौरेया सारी जिंदगी उन्हें खोज के नए-नए रास्तों की तरफ ले जाती रही । जिंदगी की ऊंचाइयों में उनका विश्वास एक क्षण के लिए भी डिगा नहीं । वह लॉरेंस की तरह नैसर्गिक जिंदगी का प्रतिरूप बन गए थे। सालीम अली प्रकृति की दुनिया में एक टापू बनने की बजाय तथा सागर बनकर उभरे।

सालीम अली को खोज के नए रास्तों की ओर ले जाने वाली थी –

(क) उनकी शहधर्मिणी।

(ख) फ्रीडा लॉरेंस।

(ग) तहमीना।

(घ) नीले कंठ की गोरिया।

उत्तर (घ) नीले कंठ की गोरिया।

प्रश्न 3. जटिल प्राणियों के लिए सालीम अली हमेशा एक पहेली बने रहेंगे । बचपन के दिनों में ,उनकी एयरगन से घायल होकर गिरने वाली ,नीले कंठ की वह गौरेया सारी जिंदगी उन्हें खोज के नए-नए रास्तों की तरफ ले जाती रही । जिंदगी की ऊंचाइयों में उनका विश्वास एक क्षण के लिए भी डिगा नहीं । वह लॉरेंस की तरह नैसर्गिक जिंदगी का प्रतिरूप बन गए थे। सालीम अली प्रकृति की दुनिया में एक टापू बनने की बजाय तथा सागर बनकर उभरे।

जिंदगी की ऊंचाइयों में उनका विश्वास?

(क) अडिग था।

(ख) मजबूत था।

(ग) कमजोर था।

(घ) संदिग्ध था।

उत्तर (घ) संदिग्ध था।

प्रश्न 4. जटिल प्राणियों के लिए सालीम अली हमेशा एक पहेली बने रहेंगे । बचपन के दिनों में ,उनकी एयरगन से घायल होकर गिरने वाली ,नीले कंठ की वह गौरेया सारी जिंदगी उन्हें खोज के नए-नए रास्तों की तरफ ले जाती रही । जिंदगी की ऊंचाइयों में उनका विश्वास एक क्षण के लिए भी डिगा नहीं । वह लॉरेंस की तरह नैसर्गिक जिंदगी का प्रतिरूप बन गए थे। सालीम अली प्रकृति की दुनिया में एक टापू बनने की बजाय तथा सागर बनकर उभरे।

नैसर्गिक जिंदगी में सालीम अली प्रतिरूप बने थे?

(क) लॉरेंस की तरह।

(ख) फ्रीडा की तरह है।

(ग) तहमीना की तरह है।

(घ) पक्षियों की तरह है।

उत्तर (क) लॉरेंस की तरह।

प्रश्न 5. जटिल प्राणियों के लिए सालीम अली हमेशा एक पहेली बने रहेंगे । बचपन के दिनों में ,उनकी एयरगन से घायल होकर गिरने वाली ,नीले कंठ की वह गौरेया सारी जिंदगी उन्हें खोज के नए-नए

रास्तों की तरफ ले जाती रही । जिंदगी की ऊंचाइयों में उनका विश्वास एक क्षण के लिए भी डिगा नहीं । वह लॉरेंस की तरह नैसर्गिक जिंदगी का प्रतिरूप बन गए थे। सालीम अली प्रकृति की दुनिया में एक टापू बनने की बजाय तथा सागर बनकर उभरे।

प्रकृति की दुनिया में सालीम अली बनकर उभरे थे?

(क) एक नदी।

(ख) एक टापू।

(ग) एक झील।

(घ) एक अथाह सागर।

उत्तर (घ) एक अथाह सागर।

प्रश्न 6. मुझे नहीं लगता कोई इस सोए हुए पक्षी को जगाना चाहेगा। वर्षों पूर्व खुद सालीम अली ने कहा था कि लोग पक्षियों को आदमी की नजर से देखना चाहते हैं । यह उनकी भूल है ,ठीक उसी तरह, जैसे जंगलों और पहाड़ों ,झरनों और आबसारो को वे प्रकृति की नजर से नहीं आदमी की आदमी की नजर से देखने को उत्सुक रहते हैं । भला कोई आदमी अपने कानों से पक्षियों की आवाज का मधुर संगीत सुनकर अपनी भीतर रोमांस का सोता फुट महसूस कर सकता है?

यहां "सोए हुए पक्षी"से लेखक का अभिप्राय है?

(क) नीलकंठ ॥

(ख) मोर।

(ग) सालीम अली।

(घ) इनमें से कोई नहीं।

उत्तर (ग) सालीम अली।

प्रश्न 7. मुझे नहीं लगता कोई इस सोए हुए पक्षी को जगाना चाहेगा। वर्षों पूर्व खुद सालीम अली ने कहा था कि लोग पक्षियों को आदमी की नजर से देखना चाहते हैं । यह उनकी भूल है ,ठीक उसी तरह, जैसे जंगलों और पहाड़ों ,झरनों और आबसारो को वे प्रकृति की नजर से नहीं आदमी की आदमी की नजर से देखने को उत्सुक रहते हैं । भला कोई आदमी अपने कानों से पक्षियों की आवाज का मधुर संगीत सुनकर अपनी भीतर रोमांस का सोता फुट महसूस कर सकता है?

'वर्षों पूर्व खुद सालीम अली ने कहा था' में खुद क्या है?

(क) प्रश्नवाचक सर्वनाम।

(ख) निश्चयवाचक सर्वनाम।

(ग) पुरुषवाचक सर्वनाम।

(घ) निजवाचक सर्वनाम।

उत्तर (घ) निजवाचक सर्वनाम।

प्रश्न 8. मुझे नहीं लगता कोई इस सोए हुए पक्षी को जगाना चाहेगा। वर्षों पूर्व खुद सालीम अली ने कहा था कि लोग पक्षियों को आदमी की नजर से देखना चाहते हैं । यह उनकी भूल है ,ठीक उसी तरह, जैसे जंगलों और पहाड़ों ,झरनों और आबसारो को वे प्रकृति की नजर से नहीं आदमी की आदमी की नजर से देखने को उत्सुक रहते हैं । भला कोई आदमी अपने कानों से पक्षियों की आवाज का मधुर संगीत सुनकर अपनी भीतर रोमांस का सोता फुट महसूस कर सकता है?

'मधुर संगीत' में 'मधुर' क्या है?

(क) परिमाणवाचक विशेषण।

(ख) संख्यावाचक विशेषण।

(ग) गुणवाचक विशेषण।

(घ) सार्वनामिक विशेषण।

उत्तर (ग) गुणवाचक विशेषण।

प्रश्न 9. मुझे नहीं लगता कोई इस सोए हुए पक्षी को जगाना चाहेगा। वर्षों पूर्व खुद सालीम अली ने कहा था कि लोग पक्षियों को आदमी की नजर से देखना चाहते हैं । यह उनकी भूल है ,ठीक उसी तरह, जैसे जंगलों और पहाड़ों ,झरनों और आबसारो को वे प्रकृति की नजर से नहीं आदमी की आदमी की नजर से देखने को उत्सुक रहते हैं । भला कोई आदमी अपने कानों से पक्षियों की आवाज का मधुर संगीत सुनकर अपनी भीतर रोमांस का सोता फुट महसूस कर सकता है?

पक्षियों की आवाज को लेखक ने क्या कहा है –

(क) शोर।

(ख) मधुर संगीत।

(ग) सोता।

(घ) झरने की आवाज।

उत्तर (ख) मधुर संगीत।

प्रश्न 10. मुझे नहीं लगता कोई इस सोए हुए पक्षी को जगाना चाहेगा। वर्षों पूर्व खुद सालीम अली ने कहा था कि लोग पक्षियों को आदमी की नजर से देखना चाहते हैं । यह उनकी भूल है ,ठीक उसी तरह, जैसे जंगलों और पहाड़ों ,झरनों और आबसारो को वे प्रकृति की नजर से नहीं आदमी की आदमी की नजर से देखने को उत्सुक रहते हैं । भला कोई आदमी अपने कानों से पक्षियों की आवाज का मधुर संगीत सुनकर अपनी भीतर रोमांस का सोता फुट महसूस कर सकता है?

हमें पक्षियों को किस दृष्टि से देखना चाहिए?

(क) आदमी की नजर से।

(ख) पक्षियों की नजर से।

(ग) प्रकृति की नजर से।

(घ) अनदेखा कर देखना चाहिए।

उत्तर (ख) पक्षियों की नजर से।

प्रेमचंद के फटे जूते

प्रश्न 1.मगर यह कितनी बड़ी 'ट्रेजडी 'है कि आदमी के पास फोटो खिंचवाने को जूता ना हो। मैं तुम्हारी यह फोटो देखते-देखते,तुम्हारे क्लेश को अपने भीतर महसूस करके जैसे रो पडना चाहता हूं मगर तुम्हारी आंखों का यह तीखा दर्द भरा व्यंग्य मुझे एकदम रोक देता है ।

तुम फोटो का महत्व नहीं समझते ।समझते होते,तो किसी से फोटो खिंचवाने के लिए जूते मांग लेते । लोग तो मांगे के कोट से वर - दिखाई करते हैं । और मांगे की मोटर से बारात निकलते हैं । फोटो खींचाने के लिए तो बीवी तक मांग ली जाती है ,तुमसे जूते ही मांगते नहीं बने ! तुम फोटो का महत्व नहीं जानते । लोग तो इतर चुपड़कर फोटो खींचाते हैं जिससे फोटो में खुशबू आ जाए ! गंदे- से- गंदे आदमी की फोटो भी खुशबू देती है!

लेखक जिस क्लेश से रोना चाहता है वह है-

(क) प्रेमचंद जी की स्थिति।

(ख) फोटो खिंचवाने का शौक।

(ग) आम आदमी की दशा।

(घ) जबरदस्ती फोटो खिंचवाना।

उत्तर (क) प्रेमचंद जी की स्थिति।

प्रश्न 2.मगर यह कितनी बड़ी 'ट्रेजडी 'है कि आदमी के पास फोटो खिंचवाने को जूता ना हो। मैं तुम्हारी यह फोटो देखते-देखते,तुम्हारे क्लेश को अपने भीतर महसूस करके जैसे रो पडना चाहता हूं मगर तुम्हारी आंखों का यह तीखा दर्द भरा व्यंग्य मुझे एकदम रोक देता है ।

तुम फोटो का महत्व नहीं समझते ।समझते होते,तो किसी से फोटो खिंचवाने के लिए जूते मांग लेते । लोग तो मांगे के कोट से वर - दिखाई करते हैं । और मांगे की मोटर से बारात निकलते हैं । फोटो खींचाने के लिए तो बीवी तक मांग ली जाती है ,तुमसे जूते ही मांगते नहीं बने ! तुम फोटो का महत्व नहीं जानते । लोग तो इतर चुपड़कर फोटो खींचाते हैं जिससे फोटो में खुशबू आ जाए ! गंदे- से- गंदे आदमी की फोटो भी खुशबू देती है!

फोटो को देखकर लेखक-

(क) प्रेमचंद का उपहास करता है।

(ख) प्रेमचंद के कष्ट को अपने भीतर अनुभव करता है।

(ग) प्रेमचंद की फटेहाली पर चिंता करता है।

(घ) प्रेमचंद की स्थिति पर रोता है।

उत्तर (ख) प्रेमचंद के कष्ट को अपने भीतर अनुभव करता है।

प्रश्न 3.मगर यह कितनी बड़ी 'ट्रेजडी 'है कि आदमी के पास फोटो खिंचवाने को जूता ना हो। मैं तुम्हारी यह फोटो देखते-देखते,तुम्हारे क्लेश को अपने भीतर महसूस करके जैसे रो पडना चाहता हूं मगर तुम्हारी आंखों का यह तीखा दर्द भरा व्यंग्य मुझे एकदम रोक देता है ।

तुम फोटो का महत्व नहीं समझते ।समझते होते,तो किसी से फोटो खिंचवाने के लिए जूते मांग लेते । लोग तो मांगे के कोट से वर - दिखाई करते हैं । और मांगे की मोटर से बारात निकलते हैं । फोटो खींचाने के लिए तो बीवी तक मांग ली जाती है ,तुमसे जूते ही मांगते नहीं बने ! तुम फोटो का महत्व नहीं जानते । लोग तो इतर चुपड़कर फोटो खींचाते हैं जिससे फोटो में खुशबू आ जाए ! गंदे- से- गंदे आदमी की फोटो भी खुशबू देती है!

लेखक अपना दुख व्यक्त नहीं कर सकता -

(क) आसपास का परिवेश देखकर।

(ख) लोगों की हंसी का पात्र न बनने के अनुमान से।

(ग) प्रेमचंद की मुखाकृति देखकर।

(घ) प्रेमचंद की आंखों का दर्द भरा व्यंग्य अनुभव करके।

उत्तर (घ) प्रेमचंद की आंखों का दर्द भरा व्यंग्य अनुभव करके।

प्रश्न 4.मगर यह कितनी बड़ी 'ट्रेजडी 'है कि आदमी के पास फोटो खिंचवाने को जूता ना हो। मैं तुम्हारी यह फोटो देखते-देखते,तुम्हारे क्लेश को अपने भीतर महसूस करके जैसे रो पडना चाहता हूं मगर तुम्हारी आंखों का यह तीखा दर्द भरा व्यंग्य मुझे एकदम रोक देता है ।

तुम फोटो का महत्व नहीं समझते ।समझते होते,तो किसी से फोटो खिंचवाने के लिए जूते मांग लेते । लोग तो मांगे के कोट से वर - दिखाई करते हैं । और मांगे की मोटर से बारात निकलते हैं । फोटो खींचाने के लिए तो बीवी तक मांग ली जाती है ,तुमसे जूते ही मांगते नहीं बने ! तुम फोटो का महत्व नहीं जानते । लोग तो इतर चुपड़कर फोटो खींचाते हैं जिससे फोटो में खुशबू आ जाए ! गंदे- से- गंदे आदमी की फोटो भी खुशबू देती है!

'फोटो का महत्व समझने' का व्यंग्यार्थ है-

(क) दिखावे में विश्वास करना।

(ख) जूते मांगना।

(ग) मोटर मांगकर बारात निकलना।

(घ) लड़की वालों से मिलने के लिए मांग कर वस्त्र पहनना।

उत्तर (क) दिखावे में विश्वास करना।

प्रश्न 5.मगर यह कितनी बड़ी 'ट्रेजडी 'है कि आदमी के पास फोटो खिंचवाने को जूता ना हो। मैं तुम्हारी यह फोटो देखते-देखते,तुम्हारे क्लेश को अपने भीतर महसूस करके जैसे रो पडना चाहता हूं मगर तुम्हारी आंखों का यह तीखा दर्द भरा व्यंग्य मुझे एकदम रोक देता है ।

तुम फोटो का महत्व नहीं समझते ।समझते होते,तो किसी से फोटो खिंचवाने के लिए जूते मांग लेते । लोग तो मांगे के कोट से वर - दिखाई करते हैं । और मांगे की मोटर से बारात निकलते हैं । फोटो खींचाने के लिए तो बीवी तक मांग ली जाती है ,तुमसे जूते ही मांगते नहीं बने ! तुम फोटो का महत्व नहीं जानते । लोग तो इतर चुपड़कर फोटो खींचाते हैं जिससे फोटो में खुशबू आ जाए ! गंदे- से- गंदे आदमी की फोटो भी खुशबू देती है!

बीवी तक क्यों मांग ली जाती है?

(क) फोटो खिंचवाने हेतु।

(ख) काम करवाने हेतु।

(ग) पानी भरवाने हेतु।

(घ) सफाई करवाने हेतु।

उत्तर (क) फोटो खिंचवाने हेतु।

प्रश्न 6. मेरा जूता भी कोई अच्छा नहीं है । यों ऊपर से अच्छा दीखता है । अंगुली बाहर नहीं निकलती , पर अंगूठे के नीचे तला फट गया है । अंगुली ढकी है, पर पंजा नीचे घीस रहा है । तुम पर्दे का महत्व ही नहीं जानते, हम पर्दे पर कुर्बान हो रहे हैं। तुम फटा जूता बड़े ठाट से पहने हो । मैं ऐसे नहीं पहन सकता । फोटो तो जिंदगी भर ऐसे नहीं खिंचाऊ चाहे कोई जीवनी बिना फोटो के ही छाप दे । तुम्हारी यह व्यंग्य-मुस्कान मेरे हौसले पास कर देती है । क्या मतलब है इसका ?कौन - सी मुस्कान है यह है?

लेखक के जूते का कौन- सा भाग फटा हुआ है?

(क) पंजे वाला।

(ख) बीच का।

(ग) एड़ी वाला।

(घ) तले वाला।

उत्तर (घ) तले वाला।

प्रश्न 7. मेरा जूता भी कोई अच्छा नहीं है । यों ऊपर से अच्छा दीखता है । अंगुली बाहर नहीं निकलती , पर अंगूठे के नीचे तला फट गया है । अंगुली ढकी है, पर पंजा नीचे घीस रहा है । तुम पर्दे का महत्व ही नहीं जानते, हम पर्दे पर कुर्बान हो रहे हैं। तुम फटा जूता बड़े ठाट से पहने हो । मैं ऐसे नहीं पहन सकता । फोटो तो जिंदगी भर ऐसे नहीं खिंचाऊ चाहे कोई जीवनी बिना फोटो के ही छाप दे । तुम्हारी यह व्यंग्य-मुस्कान मेरे हौसले पास कर देती है । क्या मतलब है इसका ? कौन - सी मुस्कान है यह है?

'तुम पर्दे का महत्व ही नहीं जानते' का अभिप्राय है?

(क) सम्मान का महत्व नहीं जानना।

(ख) छिपाने का महत्व नहीं जानना।

(ग) दिखावे का महत्व नहीं जानना।

(घ) सच्चाई छुपा कर दिखावा करने का महत्व न जानना।

उत्तर (घ) सच्चाई छुपा कर दिखावा करने का महत्व न जानना।

प्रश्न 8. मेरा जूता भी कोई अच्छा नहीं है । यों ऊपर से अच्छा दीखता है । अंगुली बाहर नहीं निकलती , पर अंगूठे के नीचे तला फट गया है । अंगुली ढकी है, पर पंजा नीचे घीस रहा है । तुम पर्दे का महत्व ही नहीं जानते, हम पर्दे पर कुर्बान हो रहे हैं। तुम फटा जूता बड़े ठाट से पहने हो । मैं ऐसे नहीं पहन सकता । फोटो तो जिंदगी भर ऐसे नहीं खिंचाऊ चाहे कोई जीवनी बिना फोटो के ही छाप दे । तुम्हारी यह व्यंग्य-मुस्कान मेरे हौसले पास कर देती है । क्या मतलब है इसका ? कौन - सी मुस्कान है यह है?

उपयुक्त गद्यांश में कौनसा मुहावरा 'हिम्मत टूट जाने' के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है?

(क) कुर्बान होना।

(ख) ठाट से पहनना।

(ग) हौसले पस्त करना।

(घ) अंगुली बाहर निकलना।

उत्तर (ग) हौसले पस्त करना।

प्रश्न 9. मेरा जूता भी कोई अच्छा नहीं है । यों ऊपर से अच्छा दीखता है । अंगुली बाहर नहीं निकलती , पर अंगूठे के नीचे तला फट गया है । अंगुली ढकी है, पर पंजा नीचे घीस रहा है । तुम पर्दे का महत्व ही नहीं जानते, हम पर्दे पर कुर्बान हो रहे हैं। तुम फटा जूता बड़े ठाट से पहने हो । मैं ऐसे नहीं पहन सकता । फोटो तो जिंदगी भर ऐसे नहीं खिंचाऊ चाहे कोई जीवनी बिना फोटो के ही छाप दे । तुम्हारी यह व्यंग्य-मुस्कान मेरे हौसले पास कर देती है । क्या मतलब है इसका ? कौन - सी मुस्कान है यह है?

'तुम फटा जूता बड़े ठाठ से पहने हो' में कौन- सा शब्द विशेषण है?

(क) बड़े।

(ख) तुम।

(ग) ठाट।

(घ) फटा।

उत्तर (घ) फटा।

प्रश्न 10 मेरा जूता भी कोई अच्छा नहीं है । यों ऊपर से अच्छा दीखता है । अंगुली बाहर नहीं निकलती ,पर अंगूठे के नीचे तला फट गया है । अंगुली ढकी है, पर पंजा नीचे घीस रहा है । तुम पर्दे का महत्व ही नहीं जानते, हम पर्दे पर कुर्बान हो रहे हैं। तुम फटा जूता बड़े ठाट से पहने हो । मैं ऐसे नहीं पहन सकता । फोटो तो जिंदगी भर ऐसे नहीं खिंचाऊ चाहे कोई जीवनी बिना फोटो के ही छाप दे । तुम्हारी यह व्यंग्य-मुस्कान मेरे हौसले पास कर देती है । क्या मतलब है इसका ? कौन - सी मुस्कान है यह है?

निम्नलिखित में अरबी भाषा का शब्द है?

(क) महत्व।

(ख) कुर्बान।

(ग) व्यंग्य।

(घ) अच्छा।

उत्तर (ख) कुर्बान।

मेरे बचपन के दिन

प्रश्न 1. अपने परिवार में मैं कई पीढियों के बाद उत्पन्न हुई । मेरे परिवार में प्राय :200 वर्ष तक कोई लड़की थी ही नहीं। सुना है ,उसके पहले लड़कियों को पैदा होते ही परमधाम भेज देते थे ।फिर मेरे बाबा ने बहुत दुर्गा- पूजा की। हमारी कुल- देवी दुर्गा थी। मैं उत्पन्न हुई तो मेरी बड़ी खातिर हुई और मुझे वह सब नहीं सुना पड़ा जो अन्य लड़कियों का सहना पड़ता है । परिवार में बाबा फारसी और उर्दू जानते थे ।पिता ने अंग्रेजी पढ़ी थी । हिंदी का कोई वातावरण नहीं था।

मेरे परिवार में कितने वर्षों से कोई लड़की नहीं थी?

(क) हजारों वर्षों से।

(ख) 200 वर्षों से।

(ग) आदिकाल से।

(घ) 300 वर्षों से।

उत्तर (ख) 200 वर्षों से।

प्रश्न 2. अपने परिवार में मैं कई पीढियों के बाद उत्पन्न हुई । मेरे परिवार में प्राय :200 वर्ष तक कोई लड़की थी ही नहीं। सुना है ,उसके पहले लड़कियों को पैदा होते ही परमधाम भेज देते थे ।फिर मेरे बाबा ने बहुत दुर्गा- पूजा की। हमारी कुल- देवी दुर्गा थी। मैं उत्पन्न हुई तो मेरी बड़ी खातिर हुई और मुझे वह सब नहीं सुना पड़ा जो अन्य लड़कियों का सहना पड़ता है । परिवार में बाबा फारसी और उर्दू जानते थे ।पिता ने अंग्रेजी पढ़ी थी । हिंदी का कोई वातावरण नहीं था।

उसके पहले लड़कियों को कहां भेज देते थे?

(क) शिवधाम।

(ख) स्वर्गधाम।

(ग) परमधाम।

(घ) बद्रीधाम।

उत्तर (ग) परमधाम।

प्रश्न 3. अपने परिवार में मैं कई पीढियों के बाद उत्पन्न हुई । मेरे परिवार में प्राय :200 वर्ष तक कोई लड़की थी ही नहीं। सुना है ,उसके पहले लड़कियों को पैदा होते ही परमधाम भेज देते थे ।फिर मेरे बाबा ने बहुत दुर्गा- पूजा की। हमारी कुल- देवी दुर्गा थी। मैं उत्पन्न हुई तो मेरी बड़ी खातिर हुई और मुझे वह सब नहीं सुना पड़ा जो अन्य लड़कियों का सहना पड़ता है । परिवार में बाबा फारसी और उर्दू जानते थे ।पिता ने अंग्रेजी पढ़ी थी । हिंदी का कोई वातावरण नहीं था।

मेरे बाबा किसकी पूजा करते थे?

(क) विष्णु की।

(ख) दुर्गा की।

(ग) काली की।

(घ) प्रकृति की।

उत्तर (ख) दुर्गा की।

प्रश्न 4. अपने परिवार में मैं कई पीढियों

के बाद उत्पन्न हुई । मेरे परिवार में प्राय :200 वर्ष तक कोई लड़की थी ही नहीं। सुना है ,उसके पहले लड़कियों को पैदा होते ही परमधाम भेज देते थे ।फिर मेरे बाबा ने बहुत दुर्गा- पूजा की। हमारी कुल- देवी दुर्गा थी। मैं उत्पन्न हुई तो मेरी बड़ी खातिर हुई और मुझे वह सब नहीं सुना पड़ा जो अन्य लड़कियों का सहना पड़ता है । परिवार में बाबा फारसी और उर्दू जानते थे ।पिता ने अंग्रेजी पढ़ी थी । हिंदी का कोई वातावरण नहीं था।

मेरे बाबा कौन-कौन सी भाषा जानते थे?

(क) हिंदी ,संस्कृत

(ख) उर्दू ,फारसी

(ग) भोजपुरी , मराठी

(घ) अंग्रेजी , कन्नड़

उत्तर (ख) उर्दू , फारसी

प्रश्न 5. अपने परिवार में मैं कई पीढियों के बाद उत्पन्न हुई । मेरे परिवार में प्राय :200 वर्ष तक कोई लड़की थी ही नहीं। सुना है , उसके पहले लड़कियों को पैदा होते ही परमधाम भेज देते थे ।फिर मेरे बाबा ने बहुत दुर्गा- पूजा की। हमारी कुल- देवी दुर्गा थी। मैं उत्पन्न हुई तो मेरी बड़ी खातिर हुई और मुझे वह सब नहीं सुना पड़ा जो अन्य लड़कियों का सहना पड़ता है । परिवार में बाबा फारसी और उर्दू जानते थे ।पिता ने अंग्रेजी पढ़ी थी । हिंदी का कोई वातावरण नहीं था।

परमधाम भेजने का आशय है?

(क) मार देते थे।

(ख) पढ़ने भेजते थे।

(ग) विवाह कर देते थे।

(घ) बाहर निकाल देते थे।

उत्तर (क) मार देते थे।

प्रश्न 6. क्रास्थवेट में एक पेड़ की डाल नीची थी । उस डाल पर हम लोग बैठ जाते थे । जब और लड़कियां खेलती थी तब हम लोग दुख मिलाते थे । उस समय एक पत्रिका निकलती थी 'स्त्री- दर्पण' उसी में भेज देते थे । अपनी तुकबंदी छप भी जाती थी । फिर यहां कवि- सम्मेलन होने लगे तो हम लोग भी उनमें जाने लगे । हिंदी का उस समय प्रचार- प्रसार था । मैं सन 1917 में यहां आई थी । उसके उपरांत गांधी जी का सत्याग्रह आरंभ हो गया और आनंद भवन स्वतंत्रता के संघर्ष का केंद्र हो गया।

लेखिका जहां बैठकर अपनी सखी के साथ तूक मिलती थी वह स्थान था-

(क) खेल का मैदान।

(ख) पेड़ के नीचे।

(ग) पेड़ की डाल।

(घ) छात्रावास का कोई कोना।

उत्तर (ग) पेड़ की डाल।

प्रश्न 7.क्रास्थवेट में एक पेड़ की डाल नीची थी । उस डाल पर हम लोग बैठ जाते थे । जब और लड़कियां खेलती थी तब हम लोग दुख मिलाते थे । उस समय एक पत्रिका निकलती थी 'स्त्री- दर्पण' उसी

में भेज देते थे । अपनी तुकबंदी छप भी जाती थी । फिर यहां कवि- सम्मेलन होने लगे तो हम लोग भी उनमें जाने लगे । हिंदी का उस समय प्रचार- प्रसार था । मैं सन 1917 में यहां आई थी । उसके उपरांत गांधी जी का सत्याग्रह आरंभ हो गया और आनंद भवन स्वतंत्रता के संघर्ष का केंद्र हो गया।

लेखिका की तुकबंदी छपती थी?

(क) सुमन- सौरभ में।

(ख) स्त्री- दर्पण में।

(ग) सरिता में।

(घ) कल्पना में।

उत्तर (ख) स्त्री- दर्पण में।

प्रश्न 8.क्रास्थवेट में एक पेड़ की डाल नीची थी । उस डाल पर हम लोग बैठ जाते थे । जब और लड़कियां खेलती थी तब हम लोग दुख मिलाते थे । उस समय एक पत्रिका निकलती थी 'स्त्री- दर्पण' उसी में भेज देते थे । अपनी तुकबंदी छप भी जाती थी । फिर यहां कवि- सम्मेलन होने लगे तो हम लोग भी उनमें जाने लगे । हिंदी का उस समय प्रचार- प्रसार था । मैं सन 1917 में यहां आई थी । उसके उपरांत गांधी जी का सत्याग्रह आरंभ हो गया और आनंद भवन स्वतंत्रता के संघर्ष का केंद्र हो गया।

लेखिका और उनकी सखी जीस समारोह में शामिल होती थी वह था-

(क) धार्मिक- सम्मेलन।

(ख) साहित्य- सम्मेलन।

(ग) संगीत- सम्मेलन।

(घ) कवि- सम्मेलन।

उत्तर (घ) कवि- सम्मेलन।

प्रश्न 9.क्रास्थवेट में एक पेड़ की डाल नीची थी । उस डाल पर हम लोग बैठ जाते थे । जब और लड़कियां खेलती थी तब हम लोग दुख मिलाते थे । उस समय एक पत्रिका निकलती थी 'स्त्री- दर्पण' उसी में भेज देते थे । अपनी तुकबंदी छप भी जाती थी । फिर यहां कवि- सम्मेलन होने लगे तो हम लोग भी उनमें जाने लगे । हिंदी का उस समय प्रचार- प्रसार था । मैं सन 1917 में यहां आई थी । उसके उपरांत गांधी जी का सत्याग्रह आरंभ हो गया और आनंद भवन स्वतंत्रता के संघर्ष का केंद्र हो गया।

गांधी जी द्वारा शुरू किए गए आंदोलन का नाम था?

(क) सत्याग्रह आंदोलन।

(ख) नमक आंदोलन।

(ग) अंग्रेजों भारत छोड़ो आंदोलन।

(घ) असहयोग आंदोलन।

उत्तर (क) सत्याग्रह आंदोलन।

प्रश्न 10.क्रास्थवेट में एक पेड़ की डाल नीची थी । उस डाल पर हम लोग बैठ जाते थे । जब और लड़कियां खेलती थी तब हम लोग दुख मिलाते थे । उस समय एक पत्रिका निकलती थी 'स्त्री- दर्पण' उसी में भेज देते थे । अपनी तुकबंदी छप भी जाती थी । फिर यहां कवि- सम्मेलन होने लगे तो हम लोग भी उनमें जाने लगे । हिंदी का उस समय प्रचार- प्रसार था । मैं सन 1917 में यहां आई थी । उसके उपरांत गांधी जी का सत्याग्रह आरंभ हो गया और आनंद भवन स्वतंत्रता के संघर्ष का केंद्र हो गया।

तब स्वतंत्रता के संघर्ष का केंद्र बना था?

(क) राष्ट्रपति भवन।

(ख) आनंद भवन।

(ग) त्रिमूर्ति भवन।

(घ) बाल भवन।

उत्तर (ख) आनंद भवन।

Kiran Sumit Kumar

kiran2018meghwal@gmail.com

6376725419